अध्याय 9

सामर्थ और महिमा

मरकुस 8:27-30 में मसीह के रूप में पतरस का यीशु का अंगीकार यीशु की सेवकाई का बड़ा मोड़ था। उसके बाद 8:31-33 में दु:ख उठाने की अपनी पहली स्पष्ट भविष्यद्वाणी करके वह अपनी आने वाली मृत्यु और जी उठने के बारे में बताने लगा। उस घोषणा के बाद यीशु ने अपने चेलों को सुस्पष्ट शब्दों में चेला होने की कीमत के बारे में बताया: ''जो कोई मेरे पीछे आना चाहे, वह अपने आपे से इन्कार करे और अपना क्रूस उठाकर, मेरे पीछे हो ले। क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाना चाहे वह उसे खोएगा, पर जो कोई मेरे और सुसमाचार के लिये अपना प्राण खोएगा, वह उसे बचाएगा'' (8:34, 35)। इस निमन्त्रण के बाद, 9:1 में उसने घोषणा की कि उसके सामने खड़े कुछ लोगों ने ''परमेश्वर के राज्य'' के आरम्भ होने के गवाह होना था।

राज्य का सामर्थ के साथ आना (9:1)[1]

[1]उसने उनसे कहा, ''मैं तुमसे सच कहता हूँ कि जो यहाँ खड़े हैं, उनमें से कोई-कोई ऐसे हैं, कि जब तक परमेश्वर के राज्य को सामर्थ्य सहित आया हुआ न देख लें, तब तक मृत्यु का स्वाद कदापि न चखेंगे।''

आयत 1. यह आयत 8:34-38 से सम्बन्धित है, और बाइबल के कई संस्करणों में यह उस भाग से जुड़ी है (देखें NRSV; ESV; CEB; GNT; NIV)। यीशु के आरम्भिक शब्दों **''मैं से तुम सच कहता हूं''** में संकेत था कि वह किसी महत्वपूर्ण संदेश पर ज़ोर देने वाला है। इस वाक्यांश का इस्तेमाल करना वास्तव में शपथ लेने के जैसा था। इब्रानी, यूनानी और लातीनी भाषा से ἀμήν (*amēn*) शब्द का लिप्यंतरण ज्यों का त्यों किया गया है। हमारी भाषा में भी यह ''आमीन'' ही है। परन्तु इसका अनुवाद कई प्रकार से किया गया है: ''सचमुच में मैं तुम से कहता हूं'' (KJV); ''निश्चित रूप से मैं तुम से कहता हूं'' (NKJV); या ''मैं तुम्हें सच बताता हूं'' (NCV)।

यह ज़ोर देने के बाद, यीशु ने आगे कहा कि **''जो यहाँ खड़े हैं, उनमें से कोई-कोई ऐसे हैं, कि जब तक परमेश्वर के राज्य को सामर्थ्य सहित आया हुआ न देख लें, तब तक मृत्यु का स्वाद कदापि न चखेंगे।''** दो यूनानी शब्द (γεύσωνται θανάτου, *geusōntai thanatou*) जिनका अनुवाद ''मृत्यु का स्वाद चखना'' हुआ है, स्पष्ट शब्द ''मृत्यु'' के लिए एक इब्रानी मुहावरा है (देखें इब्रा. 2:9)। यह वाक्यांश राज्य के आने की यीशु की प्रतिज्ञा के पूरा होने को समय सीमा में बांध देता है।

परन्तु हमें यह पूछना आवश्यक है कि '' 'राज्य सामर्थ सहित आया हुआ' किसे कहा गया है ?'' इसके समानांतर वचन मत्ती 16:28 में ''वे जब तक मनुष्य के पुत्र को उसके राज्य में आते हुए न देख लेंगे'' है। एक और समानांतर वचन लूका 9:27 में ''जब तक परमेश्वर का राज्य न

देख लें'' है। इनमें से प्रत्येक वाक्यांश एक ही घटना की ओर इशारा कर रहा है। निश्चित रूप में यह वह ''आना'' था जो उन लोगों के जीवनकाल में होने वाला था, जो वहां थे।

विलियम बार्कले ने आरम्भिक कलीसिया की ज़बर्दस्त बढ़ौतरी की बात करते हुए यीशु की बात का अर्थ लाक्षणिक रूप में बताया।[2] परन्तु इस विचार का कोई प्रमाण मिलता हुआ दिखाई नहीं देता।

औरों ने यह बताया कि यीशु कह रहा था, ''मेरा द्वितीय आगमन जल्द होगा।'' इस विचार को मानने वाले लोग तर्क देते हैं कि यीशु अपने आगमन को पुराने नियम में बताए गए ''आगमनों'' के साथ मिला रहा था। परमेश्वर के आत्मिक (लाक्षणिक) आगमन पुराने नियम के साहित्य में आम मिलते हैं।[3] 9:1 को द्वितीय आगमन के लिए बताने वालों का कहना है कि यीशु और आरम्भिक पवित्र लोग यह बताते थे कि उसका द्वितीय आगमन उसकी मृत्यु, पुनरुत्थान और स्वर्गारोहण के शीघ्र बाद होगा। यीशु की इस स्पष्ट स्वीकृति के बावजूद कि न तो उसे और न स्वर्गदूतों को पता था कि उसका वापस आना कब होना था, ये दावे किए जाते थे (मत्ती 24:36)।

जो लोग तर्क देते हैं कि यहां बताया गया ''परमेश्वर का राज्य'' ''युग'' के अंत में या मसीह के द्वितीय आगमन के समय आएगा, उन्हें यह तर्क देना पड़ेगा कि सुसमाचार के मरकुस के विवरण के लेखक, मरकुस को यीशु की यह बात समझ में नहीं आई थी कि वहां उपस्थित लोगों में से कइयों ने यीशु के राज्य के आने को देखना था। यीशु ने स्पष्ट कहा कि उसके सामने खड़े लोगों में से कुछ ने मरने से पहले ''परमेश्वर के राज्य'' को सामर्थ सहित आया हुआ देखना था। उस प्रतिज्ञा में वह समय के अंत की बात नहीं कर रहा होगा।

ऐसे भी लोग हैं जो सामर्थ के साथ यीशु के आने को उसके रूपांतर से मिलाते हैं। यह सही है कि रूपांतर के समय मसीह की सामर्थ दिखाई दी थी, परन्तु तब प्रेरितों को आत्मा के बपतिस्मे की सामर्थ नहीं दी गई थी। इस तथ्य को न भूला जाए कि यीशु की प्रतिज्ञा में राज्य के आने पर प्रेरितों को दी जाने वाली सामर्थ की बात थी। रूपांतर की कोई बात ऐसा संकेत नहीं देती कि यीशु ने तब अपने राज्य का आरम्भ किया हो और प्रेरितों को सामर्थ दी हो।[4]

9:1 से पहले यीशु तेजी से अपनी निकट आती मृत्यु की बात कर रहा था, परन्तु वहां उपस्थित लोगों के लाभ के लिए उसने विषय को बदलकर राज्य के आने के साथ ''सामर्थ''[5] (δύναμις, *dunamis*) के ईश्वरीय प्रदर्शन पर ज़ोर दिया। पवित्र आत्मा मिल जाने पर प्रेरितों ने उन्हें इस सामर्थ को दिखाना था, जैसा कि प्रेरितों 1:8 में यीशु ने भविष्यद्वाणी की (देखें लूका 24:49)। उन्होंने तब तक प्रचार नहीं करना था जब तक उन्हें सामर्थ नहीं मिलनी थी। स्पष्टतया यह तय था ताकि वे गलती किए बिना पवित्र आत्मा के द्वारा उसी समाचार को बता सकें। इस प्रतिज्ञा का पूरा होना प्रेरितों 2 में मिलता है।

राज्य पिन्तेकुस्त वाले दिन अस्तित्व में आया और प्रेरितों 2 में उसमें तीन हज़ार लोगों को मिला लिया गया। राज्य में उन्हीं लोगों को रखा गया जिन्हें कलीसिया में मिलाया गया था। प्रेरितों 2 के बाद राज्य/कलीसिया के फिर से कभी भविष्य में आने की बात नहीं की गई। यह पिन्तेकुस्त वाले दिन आ गया और इसी कारण कुलुस्सियों 1:13 और 18 के लिखे जाने के समय यह था।[6]

नये नियम में पिन्तेकुस्त के दिन के बाद, राज्य की बात कई बार वर्तमानकाल में ही की गई। ''राज्य'' और ''कलीसिया'' एक ही बात को कहने के दो ढंग हैं। उदाहरण के लिए कुलुस्सियों

1:13, 14 और 18 में ''अपने प्रिय पुत्र के राज्य'' और ''कलीसिया'' दोनों एक ही को कहा गया है। आयतें 13 और 14 में पौलुस ने समझाया कि परमेश्वर ने ''हमें अंधकार के वश से छुड़ाकर अपने प्रिय पुत्र के राज्य में प्रवेश कराया'' है। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि ''पापों की क्षमा'' पाना और ''राज्य'' में प्रवेश करना दोनों एक ही समय में होते हैं। इब्रानियों 12:28 ''राज्य'' के वर्तमान काल में मिलने की बात करता है।

''आने वाले राज्य'' से सम्बन्धित वाक्यांश में, हम सनातन राज्य की बात सोच सकते हैं जिसमें पृथ्वी पर के विश्वासियों को समय के अंत में प्रवेश करवाया जाएगा। यदि हम उस राज्य का भाग बन जाते हैं जिसे पिंतेकुस्त के दिन मसीह ने अस्तित्व में लाया, और यदि हम इसके वफ़ादार बने रहते हैं तो हम यीशु के वापस आने पर उस स्वर्गीय और अनन्तकालिक स्थिति का भाग होंगे (2 पतरस 1:5-13)।

प्रेरितों 10:44-46 और 11:15 में कुरनेलियुस के परिवार और उसके मित्रों पर पवित्र आत्मा का उतरना वैसा ही था जैसा ''आरम्भ में'' यानी पिन्तेकुस्त के दिन हुआ था। कुरनेलियुस के साथ जो कुछ हुआ उससे यह सबूत मिल गया कि अब अन्यजातियां भी, उस राज्य में शामिल हो सकती थीं जो पिन्तेकुस्त के दिन आया था। प्रेरितों 2 में आत्मा का बहाया जाना, दिखाई देने वाले ढंग से मसीह का द्वितीय आगमन नहीं था। यीशु सामर्थ के साथ आत्मा में अपने आने के द्वारा उन्हें ''दिखाई दिया।'' मरकुस 9:1 स्पष्ट बताता है कि राज्य का आना उन लोगों में से जो यीशु को सुन रहे थे, कुछ के जीते जी होना था। यह हमें आश्वस्त करता है कि राज्य आज हमारे बीच में है (इब्रा. 12:28; प्रका. 1:6)।

यीशु का रूपांतर (9:2-10)[7]

[2]छः दिन के बाद यीशु ने पतरस और याकूब और यूहन्ना को साथ लिया, और एकान्त में किसी ऊँचे पहाड़ पर ले गया। वहाँ उनके सामने उसका रूप बदल गया, [3]और उसका वस्त्र ऐसा चमकने लगा और यहाँ तक उज्ज्वल हुआ, कि पृथ्वी पर कोई धोबी भी वैसा उज्ज्वल नहीं कर सकता। [4]और उन्हें मूसा के साथ एलिय्याह दिखाई दिया; वे यीशु के साथ बातें करते थे। [5]इस पर पतरस ने यीशु से कहा, ''हे रब्बी, हमारा यहाँ रहना अच्छा है: इसलिये हम तीन मण्डप बनाएँ; एक तेरे लिये, एक मूसा के लिये, और एक एलिय्याह के लिये।'' [6]क्योंकि वह न जानता था कि क्या उत्तर दे, इसलिये कि वे बहुत डर गए थे। [7]तब एक बादल ने उन्हें छा लिया, और उस बादल में से यह शब्द निकला, ''यह मेरा प्रिय पुत्र है, इसकी सुनो।'' [8]तब उन्होंने एकाएक चारों ओर दृष्टि की, और यीशु को छोड़ अपने साथ और किसी को न देखा। [9]पहाड़ से उतरते समय उसने उन्हें आज्ञा दी कि जब तक मनुष्य का पुत्र मरे हुओं में से जी न उठे, तब तक जो कुछ तुम ने देखा है वह किसी से न कहना। [10]उन्होंने इस बात को स्मरण रखा; और आपस में वाद-विवाद करने लगे, ''मरे हुओं में से जी उठने का क्या अर्थ है?''

आयत 2. यीशु का रूप बदलना, मूसा और एलिय्याह का दिखाई देना, मूसा और एलिय्याह के साथ यीशु की बातें और बादल में से परमेश्वर का बात करना 9:2-10 से सम्बन्धित मिलती

जुलती चार अद्भुत घटनाएं हैं: ये घटनाएं **छह दिन के बाद** अर्थात पतरस के अंगीकार के बाद कैसरिया फिलिप्पी में घटीं। मत्ती 17:1 में भी ''छह दिन'' का उल्लेख है जबकि लूका 9:28 में ''कोई आठ दिन'' है। इसमें कोई संदेह नहीं कि कुल समय में दो दिनों के भाग शामिल हैं जिन्हें मरकुस और मत्ती ने गिनती में शामिल नहीं किया।

यीशु की सेवकाई की सबसे बड़ी घटनाएं उसका बपतिस्मा, रूपांतर, क्रूस पर चढ़ाया जाना और जी उठना थीं। इनमें से प्रत्येक घटना में पिता ने अपने पुत्र के लिए अपनी स्वीकृति को दिखाया। उसने इसे पहली दो घटनाओं में यानी प्रकृति की घटनाओं के द्वारा अर्थात क्रूस पर अंधियारा होने और पर्दे के फटने के द्वारा; और यीशु के जी उठने पर स्वर्गदूतों की गवाही के द्वारा शब्दों के साथ माना। जीवन के मानवीय पहलुओं में परमेश्वर जब भी आता है, हमें समझ में नहीं आता कि जो कुछ हुआ है उसका वर्णन कैसे किया जाए।

यीशु ने पतरस और याकूब और यूहन्ना को जो प्रेरितों में प्रमुख माने जाते थे **साथ लिया** यानी इन तीनों को इस बड़े अनुभव में शामिल होने के लिए चुना गया था। (5:37 में याईर के घर और 14:32, 33 में गतसमनी में अन्य अवसरों पर, केवल ये तीनों यीशु के साथ होते थे।) यीशु का इन तीनों को अपनी महिमा दिखाने का एक उद्देश्य ''दो या तीन गवाह'' देना था जो उस सब की जो हुआ था, पुष्टि कर पाते (देखें व्यव. 17:6; 19:15; मत्ती 18:16)।

यीशु उन्हें **एकान्त में किसी ऊँचे पहाड़ पर ले गया**। ताबोर पहाड़ को परम्परागत रूप में वह पहाड़ माना जाता है जहां पर यीशु का रूप बदला था; परन्तु यह केवल 1,000 फुट के लगभग ऊंचा है, और तब इसके ऊपर एक किला होता था। क्या यह जगह मैदानी इलाका हो सकती है, जो पलिश्तीन के सबसे ऊंचे बर्फ से ढके पहाड़ हर्मोन के रास्ते में थे, जो लगभग 9,200 फुट ऊंचा है?

इन प्रेरितों के भयभीत होकर देखते देखते **उनके सामने** यीशु **का रूप बदल गया**। ''रूप बदल गया'' के लिए यूनानी शब्द (μεταμορφόω, *metamorphoō*) है। इससे अंग्रेज़ी भाषा का शब्द *metamorphosis* (कायापलट) निकला है। मैटामोर्फ़ू शब्द भीतर से होने वाले बाहरी बदलाव का संकेत है। यीशु की महिमा उसके भीतर से आई थी जो वहां उपस्थिति सब लोगों के देखने लिए दिखाई गई।

आयत 3. उसका वस्त्र ऐसा चमकने लगा और यहाँ तक उज्ज्वल हुआ कि वह पृथ्वी पर की हर चीज़ से सफेद था और उसके मुकाबले कोई और चीज़ नहीं थी। वे इतने सफेद थे कि **कोई धोबी** उन्हें और **उज्ज्वल नहीं कर सकता**। KJV में है कि ''so as no fuller on earth can whiten them'' जो कि प्राचीन अंग्रेज़ी में ''fuller'' कपड़ों में कल्लर मल कर सफेद कपड़ों को साफ़ करने वाले धोबी के लिए इस्तेमाल होता था। उन्हें साफ़ करना बहुत कठिन कार्य था इस कारण प्राचीनकाल में सफेद कपड़े निराले ही होते थे और वे केवल धनवानों के पास ही हुआ करते थे। लूका 9:29 कहता है कि यीशु का ''वस्त्र श्वेत होकर चमकने लगा'' (CEB)। मत्ती 17:2 में है कि ''उसका मुंह सूर्य के समान चमका'' और लूका 9:29 कहता है कि ''उसके चेहरे का रूप बदल गया।''

आयत 4. प्रभु की तरह ही शायद अचानक **मूसा** और **एलिय्याह** ''महिमा'' में **दिखाई** दिए (लूका 9:31) और **वे यीशु के साथ बातें करते थे** (देखें मत्ती 17:3)। केवल लूका ही

बताता है कि वे क्या बातें कर रहे थे। वे यीशु की आने वाली मृत्यु की बातें कर रहे थे। लूका 9:31 बताता है कि वे उसके ''मरने'' (ἔξοδος, *exodus*) या ''इस संसार से कूच करने'' (NLT) की बातें कर रहे थे।

पुराने नियम के ये दो लोग यीशु की क्या सहायता कर सकते थे? यीशु की वास्तविक महिमा के दिखाए जाने के आरम्भ और उसकी मृत्यु के निकट आने पर, उसे उन दो लोगों के द्वारा जो पहले ही अंधकार की परछाई में से निकल चुके थे आश्वासन दिया जा सकता था। मोआब देश में नबो पहाड़ पर अकेले मरने के कारण मूसा मृत्यु के अकेलेपन की बात कर सकता था। एलिय्याह, जिसे मृत्यु नहीं आई थी उस पर्दे में से निकलने की महिमा की बात कर सकता था, जो दो संसारों को अलग करता है।[8] वह बता सकता था कि स्वर्गदूत किसी को कितनी जल्दी अब्राहम के पास पहुंचा देते हैं (लूका 16:22)। इस समय मूसा और एलिय्याह दूसरे किसी से भी बढ़कर तसल्ली दे सकते थे।

मसीह की महिमा और उसकी मृत्यु के सामने बीते समय के इन दो पुरुषों का महत्व फीका पड़ जाता है। उनके दिखाई देने और पिता की घोषणा से प्रेरितों को मसीह के उस संदेश को सुनने के लिए तैयार किया गया जो बाद में उन्हें आत्मा की ओर से दिया जाना था। मूसा ने मसीहा के आने की पेशनगोई की थी (व्यव. 18:18, 19), और वह इस तथ्य से आनन्दित हो सकता था कि आत्मा की ओर से की गई उसकी पेशनगोई अब पूरी हो चुकी है। एलिय्याह मसीह के अगर्दूत का प्रतीक था (मलाकी 3:1; 4:5); उसकी ओर इशारा करती भविष्यद्वाणियां यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के आने में पूरी हो चुकी थीं।[9] एलिय्याह चाहे लिखने वाला नबी नहीं था परन्तु वह पुराने नियम के सब नबियों में सबसे ज़बर्दस्त था।

विश्वास के पुराने नियम के ये दो नायक स्वर्गलोक से आए थे, जहां पर उन्होंने यीशु को जल्द ही उसकी मृत्यु के बाद फिर से मिलना था। बाद में यीशु ने कहा कि क्रूस पर पश्चात्ताप करने वाले एक डाकू ने स्वर्गलोक में उसके साथ होना था (लूका 23:43)।[10] यीशु द्वारा बातचीत के दौरान मूसा और एलिय्याह का नाम लेकर उन्हें बुलाए जाने पर चेलों ने उन्हें पहचान लिया होगा। उनका, कुछ दूरी से दूसरों से अलग होकर ऊंचे पहाड़ पर होना, यह सुनिश्चित करता था कि ये दोनों जो उनके साथ होने के लिए आए हुए थे साधारण लोग नहीं थे ।

आयतें 5, 6. पतरस यीशु के अपनी महिमा में होने के दृश्य से अभिभूत होकर, प्रभु को **रब्बी** (ῥαββί) या ''रब्बोनी'' (देखें मरकुस 10:51) कहकर सम्बोधन करने लगा, जो कि ''मेरे प्रभु'' या ''मेरे स्वामी'' के अर्थ वाले एक इब्रानी शब्द का जो पुराने नियम में नहीं मिलता, लिप्यन्तरण है। यीशु ने सम्माननीय उपाधि के रूप में ''रब्बी'' के किसी भी इस्तेमाल को अपनी भाषा में से निकाल दिया (देखें मत्ती 23:6-8)। परन्तु मरकुस में चार में से पहली बार है जहां लोगों ने यीशु को इस प्रकार कहकर सम्बोधन किया (9:5; 10:51; 11:21; 14:45)। सुसमाचार के समानांतर विवरणों में और यूनानी शब्दों का इस्तेमाल हुआ है। मत्ती 17:4 में ऐसा ही एक यूनानी शब्द κύριος (*kurios*, ''प्रभु'') है। लूका 9:33 में ''स्वामी'' (ἐπιστάτης, *epistatēs*) है जो किसी भी प्रकार के प्रबंधक या निरीक्षक के लिए हो सकता है। ये शब्द यीशु की वास्तविक पहचान के वर्णन में सहायक हैं।

शानदार बादल और लोगों को देखकर, पतरस ने कहा, ''**हे रब्बी, हमारा यहाँ रहना अच्छा**

हैः इसलिये हम तीन मण्डप बनाएँ; एक तेरे लिये, एक मूसा के लिये, और एक एलिय्याह के लिये।'' मूसा और एलिय्याह के लिए ''कुटिया'' (NIV; NLT) बनाना बेकार था, क्योंकि दोनों दूसरे संसार से आए थे, जहां उन्हें इनकी कोई आवश्यकता नहीं थी। शायद पतरस का मानना था कि ये महान लोग मसीह को पृथ्वी पर सांसारिक राज्य को बनाने में सहायता करेंगे। यदि वह यहूदी परम्पराओं की बात सोच रहा था, तो उसे लगा कि मसीहा के लिए मार्ग तैयार करने का एलिय्याह का काम अधिक है।

उत्साही अनुयायियों ने यीशु को हमेशा सांसारिक मुकुट दिलाना चाहा और ज़बर्दस्ती उसे ''राजा बनाने की'' कोशिश की (यूहन्ना 6:15), परन्तु उसने इनकार कर दिया था। स्वर्गीय महिमा का अनुभव पाकर उसे सांसारिक मुकुट की क्या आवश्यकता होनी थी? पतरस को यीशु की कहीं बढ़कर, अनन्त महिमा का पता नहीं था। उसे यह समझ नहीं थी कि यीशु मनुष्यों के बीच पहले ही इस प्रकार रह रहा था जैसे किसी मण्डप में हो।[11]

फिर आयत 6 कहती है, **क्योंकि वह न जानता था कि क्या उत्तर दे, इसलिये कि वे बहुत डर गए थे।** NLT में इस प्रकार लिखा है, ''उसने यह इसलिए कहा क्योंकि उसे सचमुच में पता नहीं था कि और क्या कहे, क्योंकि वे इतने डर गए थे।''

आयत 7. तब एक बादल ने उन्हें छा लिया (देखें मत्ती 17:5; लूका 9:34)। इस घटना तक प्रेरितों ने ''शिकायनाह'' के तेज वाले बादल के बारे में सुना ही हुआ था जो किसी समय तम्बू पर छाया करता था।[12] दिन के समय यह इस्राएलियों के आगे आगे चलता था। सुसमाचार के इन विवरणों के आरम्भिक पाठकों के लिए यह परमेश्वर की उपस्थिति को दर्शाता था।

तभी **उस बादल में से यह शब्द निकला**। जैसा यीशु के बपतिस्मे के समय की तरह (मरकुस 1:11), परमेश्वर ने फिर से आकाश से गवाही दी कि यीशु उसका पुत्र है, जिसके मसीहा होने का प्रचार यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने किया था। इस अवसर पर परमेश्वर की घोषणा के विवरणों में थोड़े से बदलाव हैं। मत्ती 17:5 यहां कहता है, ''यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं प्रसन्न हूं: इसकी सुनो!'' वहीं लूका 9:35 में ''यह मेरा पुत्र और चुना हुआ है, इसकी सुनो'' है! मरकुस में केवल ''**यह मेरा प्रिय पुत्र है, इसकी सुनो**'' है! ऊपर से कही गई यह बात ''आज्ञा है जो मसीह को ऊंचा करती है और राज्य के आने के लिए नींव के रूप में मूसा को, व्यवस्था और एलिय्याह को और नबियों को निकाल देती है।''[13] परमेश्वर इस बात पर ज़ोर दे रहा था कि व्यवस्था (मूसा के द्वारा दी गई) और भविष्यद्वक्ताओं (जिनका प्रतिनिधित्व एलिय्याह करता है) को अब परमेश्वर की अधिकारयुक्त आवाज के रूप में न माना जाए और सबसे बढ़कर यीशु को सुना जाए। बीते युग सदा के लिए बीत गए हैं।

मत्ती अकेला है कहता है कि परमेश्वर के यह बात कहने पर ''चेले मुंह के बल गिर गए'' परन्तु यीशु ने उन्हें छुआ और उनसे न डरने को कहा (मत्ती 17:6, 7)।

आयत 8. बादल में से यह घोषणा होने के बाद कि ''यह मेरा प्रिय पुत्र है, इसकी सुनो!'' उन्होंने **यीशु को छोड़ अपने साथ और किसी को न देखा**। मूसा और एलिय्याह अचानक वैसे ही गायब हो गए, जैसे वे अचानक दिखाई दिए थे, बादल ने उन्हें छिपा लिया था। ये दो पवित्र जन, परमेश्वर के बहुत पहले जा चुके सेवक चेलों के लाभ के लिए नहीं, बल्कि यीशु को पृथ्वी पर के अपने अंतिम दौरे की तैयारी यानी यरूशलेम में अपनी मृत्यु की ओर जाने के

लिए तसल्ली देने के लिए आए थे।

क्या मसीह मूसा और एलिय्याह के पास खड़े होने पर उसकी महिमा की चमक पड़ रही थी? यदि नहीं तो अवश्य ही उन्हें महिमायुक्त देहें दी गई होंगी ताकि प्रेरित उन्हें देख पाएं । इन दो मरे हुए पवित्र लोगों का दिखाई देना इस विश्वास की पुष्टि करता है कि धर्मी लोग मरने के बाद जीवित हैं। जो लोग यह मानते हैं कि मरने के बाद आदमी अचेत अवस्था में रहता है उन्हें परमेश्वर के पुराने नियम के इन लोगों के दिखाई देने के लिए डांट मिलनी आवश्यक है। जो भी यह कहता है ''कि केवल कल्पना थी'' ''तीनों ने स्वप्न देखा था,'' वह बाइबल की स्पष्ट बात को नज़रअंदाज़ कर रहा है। ''पतरस और उसके साथियों को नींद आई हुई थी, परन्तु वे पूरी तरह से जाग रहे थे,'' उन्होंने यीशु की ''महिमा और उन दो पुरुषों को, जो उसके साथ खड़े थे देखा'' (लूका 9:32)। उन तीनों के मन में पहले जो भी हो, पर अब यह जानकर कि मूसा और एलिय्याह यीशु के साथ बड़े आराम से उसकी आने वाली मृत्यु की बातें कर रहे थे, वे दंग रह गए होंगे (लूका 9:31)।

पतरस के मन से यह घटना कभी नहीं निकलनी थी क्योंकि प्रत्यक्षदर्शी के रूप में यह यीशु की महिमा का प्रमाण था। 2 पतरस 1:16-18 में उसने इस घड़ी को याद किया:

> क्योंकि जब हमने तुम्हें अपने प्रभु यीशु मसीह की सामर्थ का, और आगमन का समाचार दिया था तो वह चतुराई से गढ़ी हुई कहानियों का अनुकरण नहीं किया था वरन हमने आप ही अपने प्रताप को देखा था। क्योंकि जब उसने परमेश्वर पिता से आदर, और महिमा पाई जब उस प्रतापमय महिमा में से यह वाणी आई कि ''यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं प्रसन्न हूं।'' तब हम उसके साथ पवित्र पहाड़ पर थे, तो स्वर्ग से यह वाणी आते सुनी।

पतरस को पता था कि आवाज परमेश्वर की यानी ''प्रतापमय महिमा'' की थी, और यह कि महिमा के इस प्रदर्शन से परमेश्वर के वचन की पुष्टि हो गई। परमेश्वर के उत्तर ने मूसा और एलिय्याह के लिए किसी भी विशेष सम्मान की बात को खामोश कर दिया। उनकी बातें चाहे तसल्ली देने वाली हो सकती हैं, परन्तु अब वे अधिकारयुक्त नहीं होनी थीं। प्रेरितों के लिए आवश्यक था कि यीशु की सुनें, न कि किसी दूसरे की। उन्हें इस दलेरी की आवश्यकता थी, क्योंकि केवल एक सप्ताह पहले यीशु ने उन्हें अपनी आने वाली मृत्यु के बारे में बताया था। रूपांतर उनकी समझ को जिन्होंने इसे देखा था, बड़ा खोलने वाला था। अब उन्हें समझ में आ सकता था कि मृत्यु भी यीशु की सामर्थ या उसके राज्य का कुछ बिगाड़ नहीं सकती।

प्रेरितों को दर्शन का पूरा अर्थ पुनरुत्थान के बाद तक स्पष्ट नहीं होना था, जब पवित्र आत्मा की ओर से उनको सुसमाचार का पूरा संदेश दिया जाना था। प्रेरितों के काम के संदर्भ में, राज्य के आ जाने पर, यीशु से सम्बन्धित सच्चाई का पूरा संदेश सुनाने का उपयुक्त समय होना था।

आयतें 9, 10. पतरस, याकूब और यूहन्ना को यह बताने से रोका गया कि यीशु सचमुच में कौन है (8:30), परन्तु उसके परमेश्वर होने की सच्चाई बताने की पाबंदी जल्द ही हट जानी थी। स्पष्टतया दूसरे प्रेरितों को भी बताने की मनाही थी क्योंकि उन्हें यह ताड़ना यीशु ने तीनों के साथ **पहाड़ से उतरते समय** दी थी कि **जो कुछ तुम ने देखा है वह किसी से न कहना**।

यीशु ने **उन्हें आज्ञा दी कि जब तक मनुष्य का पुत्र मरे हुओं में से जी न उठे** तब तक वे जो

कुछ उन्होंने देखा था किसी और को न बताएं। ''मनुष्य का पुत्र'' (υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου, *uios tou anthrōpou*) दानिय्येल 7:13, 14 से लिया गया हो सकता है। यह अभिव्यक्ति ''परमप्रधान के पवित्र लोगों'' से सम्बन्धित ऊंचे किए गए व्यक्ति के लिए है (दानिय्येल 7:18) । इस शानदार भविष्यद्वाणी में मनुष्य के पुत्र को एक मानवीय जीव के रूप में दिखाया गया, जिसे मारे जाना था। यीशु आम तौर पर अपने लिए इसी उपाधि का इस्तेमाल किया करता था।

पतरस, याकूब और यूहन्ना को यीशु के निर्देश को मानने की उनकी समझ, बुद्धिमत्ता और स्वेच्छा के कारण रूपांतर के गवाह बनने के लिए चुना गया होगा। लूका 9:36 कहता है, ''और वे चुप रहे, और जो कुछ देखा था उसकी कोई बात उन दिनों में किसी से न कही।'' तीनों आपस में तो बातें करते होंगे कि इसका क्या अर्थ है परन्तु लोगों के साथ बात नहीं करते होंगे। **उन्होंने** [यीशु की] **इस बात को स्मरण रखा; और आपस में वाद-विवाद करने लगे, ''मरे हुओं में से जी उठने का क्या अर्थ है?''** बाद में जब प्रेरितों की विश्वसनीयता पूरी तरह से साबित हो गई और उनके आश्चर्यकर्मों से यह स्पष्ट हो गया कि वे मसीह की ओर से बोलते थे, तो यह कहानी बताई गई और हमारी शिक्षा के लिए लिख दी गई। अब जबकि सब पाबंदियां हटा ली चुकी हैं तो हम इस संदेश को सारे संसार को बता सकते हैं।

अंतिम दिन प्रेरितों को पुनरुत्थान में विश्वास करने में कोई समस्या नहीं थी पर पहाड़ के नीचे उतरते हुए जिन बातों की वे चर्चा कर रहे थे वे और थीं। पहले दो जन जिन्होंने विश्वास किया कि यीशु मरे हुओं में से जी उठा है, पतरस और यूहन्ना होने थे। इन तीनों में से और याकूब था जिसने अपने विश्वास के लिए मरने वाला पहला प्रेरित होना था (देखें प्रेरितों 12:2); परन्तु उस समय से पहले उसे सामर्थपूर्ण ढंग से यीशु के जी उठने का प्रचार करने में योगदान देने का अवसर मिलना था। कई सालों बाद जब याकूब की शहादत हुई, तो वह अपने लिए आसानी से कह सकता था, ''मैं उसी जगह जा रहा हूं जहां क्रूस पर चढ़ाए जाने पर यीशु गया।''

पवित्र आत्मा ने केवल कुछ और दिनों में उन पर हर आवश्यक सच्चाई को प्रकट करके उनकी समझ को बहुत अधिक बढ़ा देना था (देखें यूहन्ना 14:26; 16:13)। अभी, इन तीनों प्रेरितों को यह समझ नहीं थी कि क्या हुआ है, या इसके क्या अर्थ हैं। उन्हें केवल इतना पता था कि उन्हें उस पार की कोई चीज़ दिखाई दी है, जो महिमा से भरी है। यीशु को उनके सामने अन्य नौ प्रेरितों की कल्पना से जिन्होंने इसे नहीं देखा था, बहुत बड़ा किया गया।

एलिय्याह के आने की चर्चा (9:11-13)[14]

[11]और उन्होंने उससे पूछा, ''शास्त्री क्यों कहते हैं कि एलिय्याह का पहले आना अवश्य है?'' [12]उसने उन्हें उत्तर दिया, ''एलिय्याह सचमुच पहले आकर सब कुछ सुधारेगा, परन्तु मनुष्य के पुत्र के विषय में यह क्यों लिखा है कि वह बहुत दुःख उठाएगा, और तुच्छ गिना जाएगा? [13]परन्तु मैं तुम से कहता हूँ, कि एलिय्याह तो आ चुका, और जैसा उसके विषय में लिखा है, उन्होंने जो कुछ चाहा उसके साथ किया।''

आयत 11. रूपांतर के बाद पहाड़ से उतरते हुए, मार्ग में प्रेरितों ने यीशु से पूछा, **''शास्त्री क्यों कहते हैं कि एलिय्याह का पहले आना अवश्य है?''** एलिय्याह के विषय में शास्त्रियों

का कहना मलाकी 4:5, 6 के वचनों पर आधारित था। एलिय्याह की तरह यूहन्ना का विषय सुसमाचार के इस विवरण के आरम्भ से केन्द्र बिन्दु रहा है (देखें 1:2-4, जहां यशा. 40:3 और मलाकी 3:1 की भविष्यद्वाणियों को उद्धृत किया गया है)।

पतरस, याकूब और यूहन्ना निश्चय ही चकित थे कि रूपांतर के बाद से एलिय्याह यीशु के साथ नहीं रहा था। उन्हें मलाकी 4:5, 6 की भविष्यद्वाणी के साथ मेल खाते हुए एलिय्याह के आने की उम्मीद थी। स्पष्टतया मलाकी की भविष्यद्वाणी में ''यहोवा का दिन'' (4:1, 5) मसीहा के आने के दिन को कहा गया था, न कि किसी ''दिन'' को जब परमेश्वर ने इस्राएलियों को दण्ड देना था या एलिय्याह के आने के किसी दिन ने आना था।[15]

आयतें 12, 13. यीशु ने इन प्रेरितों को समझाया कि **एलिय्याह** पहले ही कैसे आ चुका था: **''परन्तु मैं तुम से कहता हूँ, कि** [वह] **तो आ चुका, और जैसा उसके विषय में लिखा है, उन्होंने जो कुछ चाहा उसके साथ किया''** (9:13)। मत्ती 17:11-13 हमें बताता है, ''तब चेलों ने समझा कि उसने हमसे यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के विषय में कहा है।''

एक अन्य अवसर पर यीशु ने भीड़ से कहा था कि यूहन्ना ही एलिय्याह है;[16] परन्तु साथ में उसने यह भी जोड़ा था, ''चाहो तो मानो'' (मत्ती 11:14)। इसका अर्थ यह हुआ, ''यदि आप उस भविष्यद्वाणी को, जिसमें यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला को एलिय्याह जैसा होने के रूप में दिखाया गया था, प्रतीकात्मक भविष्यद्वाणी मान लो तो आप को समझ में आ जाएगा।'' निश्चय ही आज के बहुत से लोगों की तरह जो पूरी की पूरी भविष्यद्वाणी का अर्थ शब्दश: निकालते हैं, यीशु के सुनने वालों को कुछ को इस भविष्यद्वाणी को समझने में कठिनाई होती होगी। यदि वे भविष्यद्वाणी का आत्मिक अर्थ स्वीकार कर सकते तो उनके लिए यह स्पष्ट हो जानी थी। यूहन्ना वास्तविक एलिय्याह नहीं था बल्कि वह एलिय्याह का आत्मिक उत्तराधिकारी था और परमेश्वर के इस नबी के स्वभाव वाला था।

जैसा कि मलाकी 4:6 में संकेत है, यह अवधारणा कि एलिय्याह **सब कुछ सुधारेगा** (9:12) परिवारों की दरारों पर, यहूदी रस्मों को सही ढंग से मानने और इस्राएल को इसकी राष्ट्रीय समस्याओं से शुद्ध रखने के लिए लागू हो सकती है। ''सब बातों का सुधार'' प्रेरितों 3:21 में इस्तेमाल की गई एक अभिव्यक्ति है, जिसका अर्थ यह प्रतीत होता है कि यदि सब लोग ''मन फिराकर लौट आएं'' (प्रेरितों 3:19), तो परमेश्वर उस राज्य की परिपूर्णता दे देगा जिसके लिए यीशु मरा। यदि मसीह के स्वर्ग में तब तक रहना होता, जब तक सब बातों का ''सुधार'' न हो जाए, तो इसका अर्थ यही हो सकता है कि बहुत से लोग मन फिरा लेंगे। यह स्पष्ट है कि प्रेरितों 3:19 पृथ्वी पर के सम्पूर्ण शांति के हज़ार वर्ष की बात नहीं हो सकती।

यदि यूहन्ना ने सब बातों का सुधार करना होता और उसने ऐसा किया होता, तो यह सुधार उस आदर्श स्थिति वाला नहीं था, जो अदन में थी। यहूदियों को लगा होगा कि यूहन्ना ऐसी आदर्श अवस्था लाएगा। यह आश्चर्य की बात नहीं है कि यूहन्ना के एलिय्याह होने के विचार के साथ उन्हें समस्या थी। ''सुधार'' में यूहन्ना का योगदान शायद जीने का ऐसा नमूना ठहरा देना था, जो आने वाली नस्लों के लिए उदाहरण होता (मत्ती 11:11-15)। यूहन्ना के प्रचार से यहूदियों में मन फिराव का बढ़िया माहौल बन गया।

9:13 में **उसके विषय में लिखा** (यानी यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के विषय में) का अर्थ

यह हो सकता है कि जो कुछ पुराने नियम के सब नबियों के साथ हुआ, वही यूहन्ना के साथ भी हुआ यानी उसने अपने ही लोगों के हाथों दु:ख सहा। एलिय्याह ने अहाब और ईज़ेबेल के हाथों दु:ख सहा था, चाहे अंत में वह बाल के नबियों पर विजयी हुआ था जब परमेश्वर ने कर्मेल पहाड़ पर अपनी बड़ी सामर्थ दिखाई (1 राजा. 18:17-40)। एलिय्याह के ''जैसा'' होने की पूर्ति के रूप में यूहन्ना ने हाकिमों के हाथों दु:ख उठाया (हेरोदेस और हेरोदियास; देखें 6:14-29)।

बहुत सम्भावना है कि लोग हैरान हो रहे थे, ''यदि परमेश्वर ने 'एलिय्याह' [यूहन्ना] को कैद हो जाने और उसका सिर कटने दिया, तो वह मसीहा के साथ क्या होने देगा?'' चेलों की समझ धीरे-धीरे बढ़ी थी, परन्तु अब वे यह जानने की कोशिश कर रहे थे कि दु:ख सहने वाला मसीहा ईश्वरीय योजना में कैसे मेल रखता है। 9:12 में यीशु चेलों के अनकहे प्रश्न पर टिप्पणी करता है: ''**परन्तु मनुष्य के पुत्र के विषय में यह क्यों लिखा है कि वह बहुत दु:ख उठाएगा, और तुच्छ गिना जाएगा?**''[17] भविष्यद्वाणियां बिल्कुल स्पष्ट थीं परन्तु यहूदी शिक्षकों के द्वारा या तो उन्हें नज़रअंदाज़ किया गया या उनकी गलत व्याख्या की गई।[18]

दुष्टात्मा से ग्रस्त एक लड़का (9:14-29)[19]

[14]जब वह चेलों के पास आया, तो देखा कि उनके चारों ओर बड़ी भीड़ लगी है और शास्त्री उनके साथ विवाद कर रहे हैं। [15]उसे देखते ही सब बहुत ही आश्चर्य करने लगे, और उसकी ओर दौड़कर उसे नमस्कार किया। [16]उसने उनसे पूछा, ''तुम इन से क्या विवाद कर रहे हो?'' [17]भीड़ में से एक ने उसे उत्तर दिया, ''हे गुरु, मैं अपने पुत्र को, जिसमें गूँगी आत्मा समाई है, तेरे पास लाया था। [18]जहाँ कहीं वह उसे पकड़ती है, वहीं पटक देती है: और वह मुँह में फेन भर लाता, और दाँत पीसता, और सूखता जाता है। मैं ने तेरे चेलों से कहा कि वे उसे निकाल दें, परन्तु वे निकाल न सके।'' [19]यह सुनकर उसने उनसे उत्तर देके कहा, ''हे अविश्वासी लोगो, मैं कब तक तुम्हारे साथ रहूँगा? और कब तक तुम्हारी सहूँगा? उसे मेरे पास लाओ।'' [20]तब वे उसे उसके पास ले आए: और जब उसने उसे देखा, तो उस आत्मा ने तुरन्त उसे मरोड़ा; और वह भूमि पर गिरा, और मुँह से फेन बहाते हुए लोटने लगा। [21]उसने उसके पिता से पूछा, ''इसकी यह दशा कब से है?'' उसने कहा, ''बचपन से। [22]उसने इसे नष्ट करने के लिये कभी आग और कभी पानी में गिराया; परन्तु यदि तू कुछ कर सके, तो हम पर तरस खाकर हमारा उपकार कर।'' [23]यीशु ने उससे कहा, ''यदि तू कर सकता है? यह क्या बात है! विश्वास करनेवाले के लिए सब कुछ हो सकता है।'' [24]बालक के पिता ने तुरन्त गिड़गिड़ाकर कहा, ''हे प्रभु, मैं विश्वास करता हूँ, मेरे अविश्वास का उपाय कर।'' [25]जब यीशु ने देखा कि लोग दौड़कर भीड़ लगा रहे हैं, तो उसने अशुद्ध आत्मा को यह कहकर डाँटा, ''हे गूँगी और बहिरी आत्मा, मैं तुझे आज्ञा देता हूँ, उसमें से निकल आ, और उसमें फिर कभी प्रवेश न करना।'' [26]तब वह चिल्लाकर और उसे बहुत मरोड़ कर, निकल आई; और बालक मरा हुआ सा हो गया, यहाँ तक कि बहुत लोग कहने लगे कि वह मर गया। [27]परन्तु यीशु ने उसका हाथ पकड़ के उसे उठाया, और वह खड़ा हो गया। [28]जब वह

घर में आया, तो उसके चेलों ने एकान्त में उस से पूछा, ''हम उसे क्यों न निकाल सके?''
[29]उसने उनसे कहा, ''यह जाति बिना प्रार्थना किसी और उपाय से नहीं निकल सकती।''

आयत 14. उन नौ प्रेरितों की मनोस्थिति जो रूपांतर के समय पीछे रह गए थे, इन तीन आनन्द से भरे प्रेरितों की स्थिति से जो यीशु के साथ पहाड़ से नीचे आए थे, बिल्कुल अलग है। **जब वह चेलों के पास आया, तो देखा कि उनके चारों ओर बड़ी भीड़ लगी है और शास्त्री उनके साथ विवाद कर रहे हैं।** यीशु के वहां न होने पर ये नौ के नौ एक लड़के में से, जिसे उसका पिता उनके पास लेकर आया था, दुष्टात्मा को नहीं निकाल पाए थे (9:18)। शास्त्रियों ने उनकी कमज़ोरी का लाभ उठा लिया था।

आयत 15. यीशु को **देखते ही** लोग **आश्चर्य करने लगे** और उसकी ओर भागे। वे इतने हैरान क्यों थे? कइयों का विचार है कि निर्गमन 24:29, 30 में मूसा की तरह पहाड़ से नीचे आने पर यीशु के चेहरे पर चमक थी। ऐसा लगता नहीं है क्योंकि यीशु ने चेलों को जो कुछ उन्होंने देखा था उसके बारे में किसी से बात न करने को कहा था। यदि उसका चेहरा चमक रहा होता तो यह घटना गुप्त नहीं रहनी थी। लोग शायद इसलिए ''आश्चर्य'' कर रहे थे कि यीशु ठीक उस समय में आ गया था जब उसके चेलों का उनकी सामर्थ की निर्बलता के लिए मज़ाक उड़ाया जा रहा था।

आयत 16. यीशु के आने से पहले, ये आलोचक कह रहे होंगे, ''तुम से दुष्टात्माएं नहीं निकलतीं और हमें नहीं लगता कि तुम्हारे गुरु से भी निकलती होंगी!'' कितनी अपमानजनक बात है! परन्तु यीशु के चेलों की कमज़ोरी का मज़ाक उड़ाने का उसकी सामर्थ से कोई सम्बन्ध नहीं रखता। जब यीशु ने यह पूछा कि **''तुम इनसे क्या विवाद कर रहे हो?''** वह भीड़ का ध्यान प्रेरितों की नाकामी से अपनी खुद की सामर्थ की ओर दिलाने की कोशिश कर रहा होगा।

आयतें 17, 18. एक पिता ने यीशु के प्रश्न का उत्तर दिया: **''हे गुरु, मैं अपने पुत्र को, जिसमें गूँगी आत्मा समाई है, तेरे पास लाया था। ... मैं ने तेरे चेलों से कहा कि वे उसे निकाल दें, परन्तु वे निकाल न सके।''** पिता ने लड़के की स्थिति और अपने पुत्र को चंगा करने में प्रेरितों की अक्षमता की बात की। मत्ती 17:18 और लूका 9:42 दोनों ही बताते हैं कि लड़के में दुष्टात्मा थी। पिता का मानना था कि यह दुष्टात्मा उसके पुत्र को बर्बाद करने की कोशिश कर रहा है। उसने यीशु को बताया, **''जहाँ कहीं** [दुष्ट आत्मा] **उसे पकड़ती है, वहीं पटक देती है: और वह मुँह में फेन भर लाता, और दाँत पीसता, और सूखता जाता है।''** दुष्टात्मा से ग्रस्त होने के लक्षण आम तौर पर कई बार शारीरिक विकारों के जैसे होते थे, विशेषकर मिर्गी के दौरों के जैसे। यह बात हैरान करने वाली नहीं है, क्योंकि दुष्टात्मा अपनी बुरी शक्ति का इस्तेमाल उस शरीर पर कब्जा करने के लिए करती होगी जिसमें यह समाई हुई थी। परमेश्वर ने यह याद दिलाने के लिए कि हर रोग का कारण अदन बाग में शैतान के द्वारा लाया गया पाप ही था, शक्ति का यह दिखावा करने दिया होगा (उत्पत्ति 3)।

मत्ती 4:23, 24 बीमार होने और दुष्टात्मा से ग्रस्त होने के बीच अंतर करता है:

> यीशु सारे गलील में फिरता हुआ उन के आराधनालयों में उपदेश करता, और राज्य का सुसमाचार प्रचार करता, और लोगों की हर प्रकार की बीमारी और दुर्बलता को दूर करता

रहा। और सारे सीरिया में देश में उसका यश फैल गया; और लोग सब बीमारों को, जो नाना प्रकार की बीमारियों और दु:खों में जकड़े हुए थे, और जिनमें दुष्टात्माएं थीं, और मिर्गीवालों और लकवे के रोगियों को, उसके पास लाए और उसने उन्हें चंगा किया।

आयतें 19, 20. प्रेरित पहले दुष्टात्माओं को निकालने के अपने दान का इस्तेमाल करने में सफल रहे थे (मरकुस 3:14, 15; 6:7; देखें मत्ती 10:1)।[20] इस क्षमता के खोने से वे परेशान हो गए होंगे। यीशु ने कहा, ''**हे अविश्वासी लोगो, मैं कब तक तुम्हारे साथ रहूँगा? और कब तक तुम्हारी सहूँगा?**'' उसकी डांट से यह पता चलता है कि सामर्थ अभी भी उनके पास थी परन्तु वे इसे ग्रहण नहीं कर पाए थे। उनकी नाकामी का कारण 9:29 में बताया गया है। उन्हें और जोश से प्रार्थना करने की आवश्यकता थी।[21] अपने व्यस्त दिनों के दौरान साफ़ तौर पर प्रार्थना न कर पाने के कारण उनका विश्वास कमज़ोर हो गया था और उनकी सामर्थ कम पड़ गई थी। इसमें कोई संदेह नहीं कि इस दुष्टात्मा को न निकाल पाने के कारण वे परेशान हो गए थे, विशेषकर इसलिए क्योंकि जब यीशु ने लड़के को चंगा करके आलोचकों का मुंह बंद किया तो यह बड़ा आसान सा लगा।

यीशु अपने प्रश्न के साथ चेलों को ही नहीं, बल्कि पूरी भीड़ को, विशेषकर शास्त्रियों को भी डांट रहा था। डांट के ये शब्द बिल्कुल उपयुक्त थे। शास्त्री जो इतने परिश्रम से पवित्र शास्त्र की प्रतिलिपियां बनाते और अध्ययन करते थे, उन्हें समझ जाना चाहिए था कि यीशु कौन है। प्रेरितों को भी यीशु के उनके इतना पास होने पर शास्त्रियों को उन पर हमला करके उन्हें निराश करने देने के कारण, डांटना सही था। 9:19 में यीशु का कड़ा उत्तर चेलों की कमज़ोरी के बिल्कुल विपरीत विस्फोटक लगता है।[22]

मत्ती 17:17 में मरकुस से अधिक कठोर भाषा है, जिसमें यीशु को उस सब से जो हुआ था लगभग आग बबूला होते हुए दिखाया गया है: ''हे अविश्वासी और हठीले लोगो, मैं कब तक तुम्हारे साथ रहूंगा? कब तक तुम्हारी सहूंगा? ...'' हो सकता है कि यीशु यह संकेत दे रहा हो कि प्रेरितों के साथ उसका समय अब बहुत अधिक नहीं होना था।

इस अवसर ने प्रेरितों के लिए और उनके आलोचकों के लिए डांट से बढ़कर काम किया। इससे मसीह में चेलों के विश्वास की वैधता की पुष्टि हो गई और शैतान की कमज़ोरी का पता चल गया।

पिता द्वारा बताई गई भयंकर स्थितियों का तब पता चला जब दुष्टात्मा ने यीशु को देखकर **तुरन्त** उस लड़के को पकड़कर **मरोड़ा और वह भूमि पर गिरा, और मुँह से फेन बहाते हुए लोटने लगा**। मरकुस 9:17, 25 ''गूंगी और बहरी आत्मा'' की बात करता है जिसने किसी से उसकी सुनने और बोलने की क्षमता छीन ली; इसलिए उसे गूंगा और बहरा माना जाता था। इस दुष्टात्मा में यह शक्ति थी कि वह उसे जो उसके वश में था आग में फेंक दे, जिससे उसे गहरे घाव हो जाएं या पानी में फेंक दे, जिससे वह डूब जाए (देखें 9:22)।

मत्ती 17:15 में पिता ने अपने लड़के को ''मिर्गी'' पड़ने की बात कही। उसके द्वारा इस्तेमाल शब्द का मूल अर्थ ''दीवाना'' (moon struck) (σεληνιάζω, *selēniazō*) है, यानी ऐसा शब्द जो ''चांद'' के लिए लातीनी भाषा के शब्द *luna* से लिया गया है। इसका

अनुवाद ''epileptic'' (मिर्गी का रोगी) (ASV; NJKV; NRSV; ESV) हो सकता है। पालगपन, मन की एक अवस्था है जो बदलती रहती है, इसे किसी समय चांद की अलग-अलग अवस्थाओं के लिए इस्तेमाल किया जाता था। मिर्गी के दौरे से व्यक्ति गिर सकता है; परन्तु इस घटना में, यह दोष दुष्टात्मा से ग्रस्त होने पर लगाया गया, जिससे वह लड़का परेशान था।

मरकुस 5:6, 7 में दुष्टात्माओं ने मसीह को पहचान लिया और बीच में उन्होंने उसकी उपस्थिति में हिंसक होकर प्रतिक्रिया दी। 9:29 में हम पढ़ते हैं कि दुष्टात्मा की ''यह जाति'' विशेषकर हिंसक थी। साफ़ है कि उसे पता था कि उसके साथ क्या होने वाला है और यीशु द्वारा उसे निकाले जाने से पहले वह लड़के को जितना नुकसान पहुंचा सकता था पहुंचाया।

आयतें 21, 22. यीशु ने पिता से पूछा, ''**इसकी यह दशा कब से है?**'' इस प्रश्न से तस्वीर साफ़ हो गई और यीशु को अपनी सामर्थ को दिखाने का बड़ा अवसर मिल गया। उस व्यक्ति का विश्वास इतना नहीं था और लगा कि उसे यीशु की सामर्थ के बारे में समझ है। शायद उसे उस कोढ़ी से, जिसे संदेह था कि यीशु उसे शुद्ध करना चाहता है या नहीं, कम विश्वास था। उस आदमी ने कहा था, ''यदि तू चाहे ...'' (1:40), जबकि इस पिता ने यीशु से कहा, ''**परन्तु यदि तू कुछ कर सके, तो हम पर तरस खाकर हमारा उपकार कर!**''

आयतें 23, 24. लगता है कि यीशु को इस अनुमान से कि हो सकता है कि वह उस लड़के को चंगा न कर पाए, बुरा लगा। उसने कहा, ''**यदि तू कर सकता है? यह क्या बात है! विश्वास करनेवाले के लिए सब कुछ हो सकता है।**'' हम चाहे अपनी परेशानियों के लिए प्रार्थना कर रहे हों या देश की समस्याओं के लिए, हमें यह विश्वास होना आवश्यक है कि परमेश्वर चीज़ों को बदल सकता है। हमें उसकी करुणा और सामर्थ में भरोसा हो सकता है और यह पता चल सकता है कि परमेश्वर सब कुछ ठीक कर देता है (देखें 7:37)।

लगभग हर कोई इस बात से सहमत है कि इस आयत में मसीह की बात में कुछ तो है। कौन यह कहेगा कि मसीही लोगों में यदि विश्वास हो तो उनमें कुछ भी कर पाने की असीमित सामर्थ हो सकती है? विश्वास करने वाले के लिए सब कुछ हो सकता है ''का अर्थ सम्भवतया यह *नहीं* है कि 'विश्वास से कुछ भी हो सकता है,' बल्कि यह है कि जिसमें विश्वास है वह परमेश्वर की सामर्थ को सीमाओं में नहीं बांधेगा।''[23]

पिता पुकार उठा, ''**हे प्रभु, मैं विश्वास करता हूँ, मेरे अविश्वास का उपाय कर।**'' यीशु ने कुछ ऐसे आश्चर्यकर्म किए, जिसमें उस व्यक्ति के विश्वास की आवश्यकता नहीं थी जिसे चंगाई दी जा रही थी। बेशक विश्वास यीशु को अच्छा लगता था और इससे उसके लिए और आश्चर्यकर्म करने के रास्ते खुल जाते थे। अपने ही गृहनगर में लोगों के विश्वास की कमी के कारण उसने सामर्थ के अधिक काम नहीं किए (चाहे उसने कुछ लोगों को चंगा किया, जैसा कि मत्ती 13:58 में संकेत है)। उसने मना कर दिया क्योंकि उनके मनों ने उनमें अविश्वास की रुकावट डाल दी थी।

आयतें 25-27. प्रेरितों को और इस अवसर पर यीशु के इर्द-गिर्द इकट्ठा हुए लोगों को (9:25) अपने विश्वास को मज़बूत करने का अच्छा अवसर दिया गया। एक अंतिम, मायूस कार्यवाही में, दुष्टात्मा ने लड़के को जितना हो पाया, तंग किया। दुष्टात्मा की कार्यवाही से वह मरने की अवस्था में पहुंच गया (9:26); सम्भवतया यह पूरी तरह से अकड़ जाने का मामला

था। परन्तु यीशु के केवल आज्ञा देने से जिसने **अशुद्ध आत्मा को यह कहकर डाँटा, ''हे गूँगी और बहिरी आत्मा, मैं तुझे आज्ञा देता हूँ, उसमें से निकल आ, और उसमें फिर कभी प्रवेश न करना''** (9:25), लड़का चंगा हो गया (9:27)। यीशु की यह आज्ञा कि ''उसमें फिर कभी प्रवेश न करना'' यह संकेत देता है कि यदि यीशु आज्ञा न देता तो उसने फिर से प्रवेश कर लेना था।

लूका 9:43 उस सबको जो हुआ था बताता था कि लोग हैरान हुए और उन्होंने परमेश्वर को महिमा दी। ''पहाड़ पर तीनों प्रेरितों पर मसीहा की महिमा दिखाई जा चुकी थी; 'परमेश्वर की महासामर्थ' तराई में सब को दिखाई दी [थी]।''[24]

आयत 28. दुष्टात्मा को न निकाल पाने पर चेलों का मन दु:खी था। जब वे यीशु के पास अकेले थे, तो उन्होंने उससे पूछा, **''हम उसे क्यों न निकाल सके?''** मत्ती 17:19, 20 बताता है कि यीशु ने उनके विश्वास की कमी के कारण उन्हें डांटा था: ''अपने विश्वास की घटी के कारण, क्योंकि मैं तुम से सच कहता हूं, यदि तुम्हारा विश्वास राई के दाने के बराबर भी हो, तो इस पहाड़ से कह सकोगे, 'यहां से सरककर वहां चला जा', तो वह चला जाएगा; और कोई बात तुम्हारे लिये असम्भव न होगी।'' उनका बड़ा विश्वास होने पर भी, परमेश्वर की जो पहाड़ों का बनाने वाला है, पहाड़ों को हटा सकता है।

आयत 29. यीशु ने उत्तर दिया, **''यह जाति बिना प्रार्थना किसी और उपाय से नहीं निकल सकती।''** कुछ हस्तलेखों में ''प्रार्थना और उपवास'' (KJV) है। ''और उपवास'' वाक्यांश स्पष्टतया मूल लेख में नहीं है (देखें NIV; ASV; NRSV; ESV; NLT)। इसके अलावा यह बिल्कुल सम्भव नहीं लगता कि यीशु ने दुष्टात्माओं को निकालने के लिए उपवास रखने की आज्ञा दी है। उसने कहीं पर भी यह नहीं सिखाया कि तप आदि करने (जैसे भोजन का त्याग करने) से किसी को चमत्कार करने की शक्ति मिल जाएगी। नये नियम में उपवास रखने की आज्ञा बिल्कुल नहीं दी गई, परन्तु इसे व्यक्तिगत धार्मिकता को बनाए रखने के लिए सहायता के रूप में दिखाया गया है।

प्रार्थना हमारे जीवनों में एक बड़ी सामर्थ है जिसका इस्तेमाल हम आम तौर पर नहीं कर पाते। सरगर्म विश्वास और सरगर्म प्रार्थना दोनों साथ-साथ चलते हैं। यीशु का ''यह जाति'' कहना याद दिलाता है कि कुछ संघर्ष (जैसे कुछ दुष्टात्माएं) दूसरे संघर्षों से अधिक खराब और शक्तिशाली होते हैं। उन पर काबू पाने के लिए अधिक दृढ़ और हठ के साथ प्रार्थना करनी आवश्यक हो सकती है (देखें मत्ती 7:7; लूका 18:1-8)। एक और अवसर पर, यीशु ने कहा, ''इसलिये जागते रहो और हर समय प्रार्थना करते रहो कि तुम इन सब आनेवाली घटनाओं से बचने और मनुष्य के पुत्र के सामने खड़े होने के योग्य बनो'' (लूका 21:36)।[25]

यीशु ने चंगाई पाए हुए इस लड़के को कोमलता से उसके पिता को लौटा दिया (लूका 9:42)। उसने अपने आपको सर्वशक्तिमान मसीह और कोमलता और नम्रता वाला मसीह होना दिखाया।

एक और भविष्यद्वाणी (9:30-32)[26]

[30]फिर वे वहाँ से चले, और गलील में होकर जा रहे थे। वह नहीं चाहता था कि कोई जाने, [31]क्योंकि वह अपने चेलों को उपदेश देता और उनसे कहता था, ''मनुष्य का पुत्र, मनुष्यों के हाथ में पकड़वाया जाएगा, और वे उसे मार डालेंगे; और वह मरने के तीन दिन बाद जी उठेगा।'' [32]पर यह बात उन की समझ में नहीं आई, और वे उससे पूछने से डरते थे।

आयतें 30-32. यीशु की मृत्यु की तीन भविष्यद्वाणियों में से दूसरी भविष्यद्वाणी 9:30-32 में मिलती है (देखें 8:31-33; 10:32-34)। चेले जो कुछ वह उन्हें बता रहा था अभी भी उसे समझे नहीं थे। पहले उसने अपनी मृत्यु के आवश्यक होने पर ज़ोर दिया था; यहां उसने इसके सुनिश्चित होने पर ध्यान दिया। बाद में उसने इसकी क्रूरता का वर्णन करना था।

यहां यहूदियों ने अपने मसीहा की मृत्यु को समझ नहीं पाना था इसलिए उनकी उलझन कोई हैरानी की बात नहीं है। यीशु के यह समझाने के लिए वही मसीहा है उसके प्रयासों के कारण उसके अपने भाई उसकी आलोचना करने लगे थे। जवाब में उन्होंने उसे अपने आपको खुलकर पेश करने की चुनौती दे डाली थी (यूहन्ना 7:3, 4)।

आयत 30 में एकांत चाहने के यीशु के प्रयास के मरकुस के विवरण में अंतिम उल्लेख है। वह अपनी आने वाली मृत्यु और जी उठने के बारे में प्रेरितों को और विस्तार से बताने के लिए समय चाहता होगा। उसके पास उन बारहों को अपनी मृत्यु के लिए तैयार करने का यह अंतिम अवसर रहा होगा। शायद यही कारण था कि **वे वहाँ से चले, और गलील में होकर जा रहे थे। वह नहीं चाहता था कि कोई जाने।** उस मार्ग पर जो मृत्यु की ओर जाता था यरूशलेम जाते हुए वह ऐसे रास्ते पर गया जिस पर से बहुत कम लोग जाते थे। इस बातचीत में उसने जो नई बात जोड़ी वह उसके पकड़वाए जाने की बात है (देखें 8:31)।

यह दिखाने के लिए कि उसकी मृत्यु निकट है और बिल्कुल पक्की है 9:31 में यीशु ने अजीब ढंग से वर्तमानकाल का इस्तेमाल किया (जैसा कि यूनानी बाइबल में मिलता है)। लूका 9:43-45 संकेत देता है कि यीशु ने अपनी बात को कितने ज़ोरदार ढंग से कहा:

> परन्तु जब सब लोग उन सब कामों से जो वह करता था, अचम्भित थे, तो उसने अपने चेलों से कहा, ''तुम इन बातों पर कान दो, क्योंकि मनुष्य का पुत्र मनुष्यों के हाथ में पकड़वाया जाने को है।'' परन्तु वे इस बात को न समझते थे, और यह उनसे छिपी रही कि वे उसे जानने न पाएं; और वे इस बात के विषय में उससे पूछने से डरते थे।

मरकुस ने आगे कहा, **''वे उसे मार डालेंगे; और वह मरने के तीन दिन बाद जी उठेगा।''** यदि चेलों को अभी उसकी मृत्यु की आवश्यकता की समझ नहीं आई तो निश्चय ही उन्हें पुनरुत्थान की आवश्यकता का अभी पता नहीं चल पाना था। यह जानकारी भविष्य की उनकी समझ के लिए थी, न कि वर्तमान की उनकी जानकारी के लिए। बेशक प्रेरितों को केवल यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान की सारी बातों की समझ तभी होनी आवश्यक नहीं थी। सब बातें बाद में समझ में आ जानी थीं, जब उन्होंने मसीह को जी उठे देखना था और विशेषकर जब पवित्र आत्मा उन पर उतरना था। अपने पुनरुत्थान के बाद यीशु ने उन्हें बताया, ''हे निर्बुद्धियो, और

भविष्यद्वक्ताओं की सब बातों पर विश्वास करने में मन्दमतियो! क्या अवश्य न था कि मसीह ये दु:ख उठाकर अपनी महिमा में प्रवेश करे?'' (लूका 24:25, 26)।

प्रेरित **उससे** और कुछ भी **पूछने से डरते थे**। हाल में मिली डांटों से उन्हें उसके जवाब से डर लगने लगा होगा, जिस कारण वे पूछ नहीं पाए कि उसके कहने का क्या अर्थ था। यीशु को तो अपनी प्रायश्चित करने वाली मृत्यु का ही पता था और अपने पुनरुत्थान की विजय के सुनिश्चित होने का भी पता था, परन्तु प्रेरित उन बातों से जो उसने उन्हें बताई थीं, ''बहुत उदास'' थे (मत्ती 17:23)। इन भविष्यद्वाणियों के कारण जिन्हें वे पूरी तरह से समझते नहीं थे वे अजीब सी उलझन और परेशानी में थे।

9:31 में यीशु के ''तीन दिन बाद'' वाला वाक्यांश दिन के किसी भी भाग को पूरा गिनने की यहूदी गणना के ढंग के अनुसार है। मत्ती 17:23 और लूका 9:22 में ''तीसरे दिन'' वाक्यांश हमें अलग लग सकता है, परन्तु यहूदियों के लिए इसका अर्थ एक ही था। यूहन्ना 2:19 में यीशु ने कहा, ''मैं इसे [यानी अपनी शारीरिक देह को] तीन दिन में खड़ा कर दूंगा।'' कई महीनों के बाद यह दावा किया गया कि उसने कहा था कि वह मन्दिर को गिराकर इसे तीन दिनों में बना देगा। परन्तु यह यीशु की बात को मूर्खतापूर्ण ढंग से तोड़ा मरोड़ा गया था।[27]

यीशु यह घोषणा कर रहा था कि उसने मृत्यु पर विजय पा लेनी थी। पिता और पुत्र ने पुनरुत्थान में पूरी तरह से सहयोग किया (रोमियों 8:11; देखें यूहन्ना 10:17, 18)। सचमुच में ''अधोलोक के फाटक'' उसे रोक नहीं सकते थे (देखें मत्ती 16:18)। प्रकाशितवाक्य में कहा गया है कि ''वध किया हुआ मेमना'' है अब उसी के पास ''मृत्यु और अधोलोक की कुंजियां'' हैं (1:18; 5:12)। (देखें 5:6; 13:8.)

दीनता: बड़ा बनने का मार्ग (9:33-37)[28]

[33]फिर वे कफ़रनहूम में आए; और घर में आकर उसने उनसे पूछा, ''रास्ते में तुम किस बात पर विवाद कर रहे थे?'' [34]वे चुप रहे, क्योंकि मार्ग में उन्होंने आपस में यह वाद-विवाद किया था कि हम में से बड़ा कौन है। [35]तब उसने बैठकर बारहों को बुलाया और उनसे कहा, ''यदि कोई बड़ा होना चाहे, तो सबसे छोटा और सब का सेवक बने।'' [36]और उसने एक बालक को लेकर उनके बीच में खड़ा किया, और उसे गोद में लेकर उनसे कहा, [37]''जो कोई मेरे नाम से ऐसे बालकों में से किसी एक को भी ग्रहण करता है, वह मुझे ग्रहण करता है; और जो कोई मुझे ग्रहण करता, वह मुझे नहीं, वरन् मेरे भेजनेवाले को ग्रहण करता है।''

आयतें 33, 34. शायद एकांत की तलाश में यीशु अपने चेलों से आगे चल रहा था जबकि वे **कफ़रनहूम** को जाते हुए रास्ते में बहस कर रहे थे। वे डर रहे थे कि उसे उनकी बातें सुन न जाएं क्योंकि **उन्होंने आपस में यह वाद-विवाद किया था कि हम में से बड़ा कौन है**। उसे मालूम था कि वे कुछ ऐसी बातें कर रहे हैं जिन्हें उसे सुलझाना पड़ेगा। इस अवसर पर दिया गया यीशु का नियम क्रांतिकारी था।

आयत 35. तब उसने बैठकर बारहों को बुलाया और उनसे कहा, ''यदि कोई बड़ा

होना चाहे, तो सबसे छोटा और सब का सेवक बने।'' उसने इस बात पर ज़ोर दिया कि दूसरों का सेवक बनना अच्छी बात है। यहूदियों के लिए सेवक होने की बात नीचा दिखाने वाली थी; जिस कारण यीशु ने यह घोषणा करके चेलों को उससे भी बड़ी उलझन में डाल दिया।[29] यह बताया जाना कि सेवा करना बड़ा होने की कुंजी है उनके लिए कठिन सबक था।

इससे कम महत्व वाली बात यह है कि आदर केवल सेवा से मिलने वाला ही है, न कि आदर पाना अपने आप में लक्ष्य। ''विनाश से पहले गर्व और ठोकर खाने से पहले घमण्ड आता है'' (नीति. 16:18)। बाइबल में इस विनाशकारी घमण्ड को बार-बार दिखाया गया है।[30]

आयतें 36, 37. दीन सुरुफिनीकी स्त्री को उसकी बेटी के चंगा किए जाने में ऊंचा उठाया गया (मरकुस 7:29; देखें मत्ती 15:28), जैसे चुंगी लेने वाले पश्चात्तापी को उठाया गया था जिसने विनम्र होकर प्रार्थना की थी और धर्मी ठहराया गया था (लूका 18:13, 14)।[31] मत्ती 18:2-4 में यीशु ने बताया कि व्यक्ति तब तक वास्तव में नहीं बदलता है जब तक वह अपने स्वभाव को बच्चे के जैसा नहीं बना लेता।

मरकुस में बच्चे जैसा बनने की यह अवधारणा इतनी स्पष्ट नहीं है। यूनानी-रोमी काल में बच्चों को समाज में बड़ा छोटा दर्जा दिया जाता था;[32] स्पष्ट है कि रोमियों का मानना था कि बच्चे को आसानी से बदला जा सकता है। यीशु ने अपनी पूरी सेवकाई के दौरान बच्चों और महिलाओं के महत्व को बढ़ाया।

9:35-37 में यीशु ने अपनी बात समझाने के लिए एक अबोध बालक का इस्तेमाल किया। ऐसा करके उसने संकेत दिया कि उसका यह मानना नहीं था कि बच्चे जन्म के समय आदम के अपराध के दोषी होते हैं। यहेजकेल 18:20 साफ़ साफ़ कह देता है कि बच्चा अपने पिता के पापों के कारण दोषी नहीं है। यह वचन उस पुरानी शिक्षा का खण्डन करते हैं जिसे अगस्टिन के लेखों से बड़ा प्रोत्साहन मिला।[33] ''नवजात बच्चों के बपतिस्मे'' की आवश्यकता, जिसका आरम्भ इस विश्वास के कारण हुआ था कि आदमी का जन्म पापी के रूप में होता है, यीशु द्वारा पहले से ही खण्डन कर दिया गया! छोटे बच्चे निष्कलंक हैं और उन्हें बड़ों की तरह मन फिराने और मनपरिवर्तन करने की आवश्यकता नहीं है।

यीशु ने अपने चेलों से कहा, **''जो कोई मेरे नाम से ऐसे बालकों में से किसी एक को भी ग्रहण करता है, वह मुझे ग्रहण करता है; और जो कोई मुझे ग्रहण करता, वह मुझे नहीं, वरन् मेरे भेजनेवाले को ग्रहण करता है''** (9:37)। मत्ती 18:6 ''इन छोटों में से जो विश्वास करते हैं'' की बात करता है और यीशु ने उन्हें ठोकर खिलाने वालों को चेतावनी दी। पहले पहले चेलों को लगा होगा कि यीशु के कहने का अर्थ केवल इतना है कि वे छोटे बच्चों को स्वीकार करें; परन्तु जल्द ही उन्हें समझ में आ गया कि अबोध बालकों का इस्तेमाल वह केवल उदाहरण के रूप में कर रहा है। वे पापी नहीं थे और यीशु ने लोगों को उनके जैसे बनने की सलाह दी। उसने अपने अनुयायियों को छोटे बच्चों को सहायता प्रदान करने को कहा; यह बात नये बने चेलों अर्थात विश्वास में बालकों के लिए भी होनी थी।

यह कितना दु:खी करने वाला दृश्य है! यीशु का ध्यान अपने क्रूस की ओर जाने पर लगा हुआ था, जबकि चेले यह बहस कर रहे थे कि राज्य में सबसे बड़ा कौन होगा। दूसरों के ऊपर अपने आप को बड़ा बनाने के बजाय दीन होकर सेवक बनना, मसीह के संदेश का सार है।

फिलिप्पियों 2:3, 4 में पौलुस ने यही सबक दिया: ''विरोध या झूठी बड़ाई के लिए कुछ न करो पर दीनता से एक-दूसरे को अपने से अच्छा समझो। हर एक अपने ही हित की नहीं, बरन दूसरों की हित की भी चिन्ता करे।'' जो भी काम करने को दिया जाए उसे करने को तैयार रहना ही व्यक्ति को बड़ा बनाता है। प्रभु की कलीसिया के डीकनों का उद्देश्य और काम सेवा करना ही है। इसके विपरीत अपने आपको ऊंचा करना कलीसिया में समस्या खड़ी कर सकता है। उदाहरण के लिए जब कोई, ऐल्डर के रूप में रौब जमाना चाहता है। नये नियम में विनम्र शब्दों में इस्तेमाल हुए ''डीकन'' ''मिनिस्टर'' और ''सेवक'' के बजाय, ऊंचे सम्मान प्रतिष्ठा और आमदनी का संकेत देती ''बिशप'' और ''आर्क बिशप'' जैसी उपाधियों के साथ ऊंचा होने का संघर्ष धार्मिक जगत में व्यापक रूप में दिखाई देता है।

ईर्ष्या और सहनशीलता का पाठ (9:38-41)[34]

[38]तब यूहन्ना ने उससे कहा, ''हे गुरु, हम ने एक मनुष्य को तेरे नाम से दुष्टात्माओं को निकालते देखा और हम उसे मना करने लगे, क्योंकि वह हमारे पीछे नहीं हो लेता था।'' [39]यीशु ने कहा, ''उस को मत मना करो; क्योंकि ऐसा कोई नहीं जो मेरे नाम से सामर्थ्य का काम करे, और जल्दी से मुझे बुरा कह सके, [40]क्योंकि जो हमारे विरोध में नहीं, वह हमारी ओर है। [41]जो कोई एक कटोरा पानी तुम्हें इसलिये पिलाए कि तुम मसीह के हो तो मैं तुम से सच कहता हूँ कि वह अपना प्रतिफल किसी रीति से न खोएगा।''

आयत 38. फिर यूहन्ना ने यीशु को बताया, **''हे गुरु, हम ने एक मनुष्य को तेरे नाम से दुष्टात्माओं को निकालते देखा और हम उसे मना करने लगे, क्योंकि वह हमारे पीछे नहीं हो लेता था।''** यूहन्ना और दूसरे प्रेरित 9:38-41 में आश्चर्यकर्म करने वाले व्यक्ति को नहीं जानते थे, परन्तु यीशु उसे जानता था। कालांतर में किसी समय में यीशु ने उसे दुष्टात्माओं को निकालने की शक्ति दी होगी। नहीं तो उसके पास यह आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ नहीं होनी थी। इसके जैसे और लोगों की संख्या यानी मसीह का प्रचार करने और लोगों में सेवा करने वाले उन अनाम लोगों की संख्या का हमें पता नहीं है कि कितनी थी।

यह घटना डिनोमिनेशनों या साम्प्रदायिक मतभेदों के जैसे नहीं है। यह किसी भी प्रकार से धार्मिक फूट को सही नहीं ठहराती। न ही ऐसा है कि यीशु का यह चेला शिक्षा से सम्बन्धित विभाजनों के विषय में उदार होने के लिए प्रेरितों में आधुनिक इच्छा के जैसा नहीं था। यीशु अपने चेलों के बीच फूट नहीं चाहता था; यूहन्ना 17 में उसने एकता के लिए सच्चे मन से प्रार्थना की। बाद में पौलुस ने यह विनती की कि कुरिन्थुस की मण्डली में किसी प्रकार की कोई फूट न हो (1 कुरि. 1:10)।

इसके बजाय मण्डलियों के बीच ईर्ष्या को गलत बताता है। यह उन आधारों पर जिनमें नये नियम की शिक्षा नहीं है दूसरे मसीही लोगों के साथ संगति करने को तुच्छ समझने या नकारने की निंदा करता है।

यूहन्ना द्वारा इस आदमी के बारे में यीशु से पूछने पर, किसी शिक्षा या व्यवहार में किसी अंतर का पता नहीं चलता। आपत्ति केवल इतनी थी कि यह अजनबी प्रेरितों में से नहीं था। इस

आदमी का विश्वास वही था जो प्रेरितों का था। मसीह के प्रति उसकी वफ़ादारी वैसे ही थी चाहे काम वह अकेले कर रहा था। ईर्ष्या से भरे प्रेरितों के झुण्ड को यह सीखना आवश्यक था कि मसीह की सेवा केवल वही नहीं कर रहे हैं।

आयत 39. यीशु ने यह कहते हुए यूहन्ना की चिंता का जवाब दिया, ''**उस को मत मना करो; क्योंकि ऐसा कोई नहीं जो मेरे नाम से सामर्थ्य का काम करे, और जल्दी से मुझे बुरा कह सके।**'' यह व्यक्ति सचमुच के आश्चर्यकर्म कर रहा था यानी वह केवल मत्ती 7:22, 23 वाले लोगों की तरह नहीं था जिन्होंने केवल यह माना कि वह आश्चर्यकर्म कर रहे हैं। यीशु के समय में ऐसी योग्यताएं होने का दावा करने वाले बहुत से लोग थे। परन्तु वे यीशु की शक्ति से दुष्टात्माओं को नहीं निकाल पाए थे। मूर्तिपूजक पेपायरी ढोंगियों द्वारा कथित देवताओं या आत्माओं को बुलाने या प्राचीन नायकों से विनती करने के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले जादू टोनों और अन्य ढंगों के बारे में बताता है।

न्याय के दिन कुछ लोग दावा करेंगे कि वे चमत्कार करते थे। उनमें से स्क्किवा के पुत्र हो सकते हैं जिन्होंने यीशु के नाम में दुष्टात्मा को निकालने की कोशिश की थी परन्तु वह उन पर हावी हो गई थी (प्रेरितों 19:13-16)। यदि शैतान अपने शैतानी सेवकों को दुष्टात्माओं को निकालने के लिए झूठे गुरुओं को अनुमति दे देता तो शैतान के ''अपना ही विरोधी'' होने की बात उनके ऊपर लागू होनी थी (मत्ती 12:26; लूका 11:18; देखें मरकुस 3:26)। यीशु केवल एक शब्द से दुष्टात्माओं को निकाल देता था; और यदि दुष्टात्माएं दया की भीख मांगतीं तो उन्हें नहीं मिलती (मत्ती 8:28-32; मरकुस 5:2-13; लूका 8:27-33)।

मत्ती 12:27 में यीशु ने फरीसियों के दावों का जवाब यह कहते हुए दिया, ''यदि मैं शैतान की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता हूं, तो तुम्हारे वंश किस की सहायता से निकालते हैं?'' दूसरे शब्दों में, उनका दावा था कि उनके कुछ लोग उनमें से जिनमें दुष्टात्माएं हैं उन्हें निकाल रहे थे। यहां पर यीशु ने *argumentum ad hominem* (यानी उसने किसी की दलील को उसी के विरोध में इस्तेमाल किया) लागू किया। जे. डब्ल्यू. मैक्गर्वे ने लिखा है, ''हमारे प्रभु द्वारा उनका हवाला देना ... किसी भी प्रकार से यह अर्थ नहीं देता कि उनमें दुष्टात्माओं पर किसी भी प्रकार की कोई *वास्तविक* शक्ति थी। न ही वे किसी प्रकार से ऐसा कर सकते थे, नहीं तो उनके जैसा किए जाने वाले मसीह के काम से लोग इतने चकित न होते।''[35]

आयत 40. क्योंकि जो हमारे विरोध में नहीं, वह हमारी ओर है, मत्ती 12:30 की बात से थोड़ा अलग है जहां कहा गया है: ''जो मेरे साथ नहीं वह मेरे विरोध में है, और जो मेरे साथ नहीं बटोरता वह बिखेरता है।'' यीशु के सम्बन्ध में तटस्थ होना असम्भव है। वह उदासीन होने या नीमगर्म होने से घृणा करता है (देखें प्रका. 3:15, 16)। बहुत से लोग जो उसके साथ होने का दावा करते हैं वास्तव में वे बिल्कुल उसके साथ नहीं हैं (मत्ती 7:22)।

आयत 41. यीशु ने आगे कहा, ''**जो कोई एक कटोरा पानी तुम्हें इसलिये पिलाए कि तुम मसीह के हो तो मैं तुम से सच कहता हूँ कि वह अपना प्रतिफल किसी रीति से न खोएगा।**'' ये अज्ञात ओझा प्रभु के नाम में नेकी के काम कर रहा था। सच्चे मन से किया ऐसा कोई काम बिना प्रतिफल के नहीं होगा। परन्तु इसका प्रतिफल अनन्त उद्धार की गारंटी नहीं है; तब परमेश्वर का उद्धार, कामों के आधार पर होगा, जिसमें व्यक्ति को स्वर्ग में जाने के अपने मार्ग

को कमाना पड़ेगा। यदि कोई पानी के कटोरे तो पिलाता रहता है परन्तु दूसरी बातों में यीशु के साथ ईमानदार नहीं है, तो क्या उसका परोपकार करना उसे बचा लेगा? नहीं। उद्धार अनुग्रह की बात है न कि यह दी जाने वाली सेवाओं का भुगतान है। यदि कोई सचमुच में चेला बना रहता है तो उसे परमेश्वर के अुग्रह से स्वर्ग में अपना प्रतिफल मिलेगा। यदि कोई मसीही नहीं है, यानी मसीह की इच्छा को नहीं मानता है, तो दूसरों की सेवा करने के लिए उसका जो भी प्रतिफल होगा वह पृथ्वी पर के उसके जीवन के दौरान उसे मिलने वाली प्रशंसा ही है।

यीशु के चेले के रूप में नेकी के किए जाने वाले छोटे से छोटे काम के लिए भी हमारे प्रभु की ओर से प्रतिफल दिया जाएगा। हो सकता है कि हम हमारे साथ की जाने वाली नेकी को भूल जाए यां नज़रअंदाज़ कर दें, परन्तु हमारा प्रभु नहीं भूलेगा। वह अपनी की गई प्रतिज्ञा को हमेशा पूरा करता है। मसीह के चेले के रूप में की जाने वाली कोई भी सेवा बेकार नहीं है। मसीही व्यक्ति भूखे को खाना केवल इसलिए खिलाना चाहेगा क्योंकि इसकी आवश्यकता है। जब मसीह का प्रेम किसी के मन में भर जाता है तो उस प्रेम की भीतरी और बाहरी अभिव्यक्तियां देखने को मिलेंगी।

नरक से बचने के लिए कठोर कार्यवाही (9:42-48)[36]

[42]''जो कोई इन छोटों में से जो मुझ पर विश्वास करते हैं, किसी को ठोकर खिलाए तो उसके लिए भला यह है कि एक बड़ी चक्की का पाट उसके गले में लटकाया जाए और वह समुद्र में डाल दिया जाए। [43]यदि तेरा हाथ तुझे ठोकर खिलाए तो उसे काट डाल। टुण्डा होकर जीवन में प्रवेश करना तेरे लिये इससे भला है कि दो हाथ रहते हुए नरक की आग में डाला जाए जो कभी बुझने की नहीं। [[44]जहाँ उनका कीड़ा नहीं मरता और आग नहीं बुझती।] [45]यदि तेरा पाँव तुझे ठोकर खिलाए तो उसे काट डाल। लंगड़ा होकर जीवन में प्रवेश करना तेरे लिये इससे भला है कि दो पाँव रहते हुए नरक में डाला जाए। [[46]जहाँ उनका कीड़ा नहीं मरता और आग नहीं बुझती।] [47]यदि तेरी आँख तुझे ठोकर खिलाए तो उसे निकाल डाल। काना होकर परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना तेरे लिये इससे भला है कि दो आँख रहते हुए तू नरक में डाला जाए।

आयत 42. यीशु ने कहा, **''जो कोई इन छोटों में से जो मुझ पर विश्वास करते हैं, किसी को ठोकर खिलाए तो उसके लिए भला यह है कि एक बड़ी चक्की का पाट उसके गले में लटकाया जाए और वह समुद्र में डाल दिया जाए।''** ''ठोकर'' σκανδαλίζω, (*skandalizō*) का अर्थ पूरी तरह से दूर होना है। दूसरों को पाप करने के लिए उकसाना बेकार काम है। हो सकता है कि हम बाद में मन फिरा लें। परन्तु उन लोगों का क्या, जिन्हें हमने पाप करने लिए उकसाया? हमें इस तथ्य का सामना करना पड़ेगा कि हमारे व्यवहार से दूसरे लोग वास्तव में नष्ट हो सकते हैं। यह मसीह के विरुद्ध पाप है। विश्वासी मसीही जीवन के लिए ऐसा नियम बड़ा महत्वपूर्ण है। पौलुस ने कहा कि यदि हम भाइयों के विरुद्ध पाप करते हैं, तो हम मसीह के विरुद्ध पाप करते हैं (1 कुरि. 8:12)।

भारी बोझ बांधकर डुबोया जाना दण्ड देने का एक तरीका हुआ करता था, विशेषकर रोमी

जगत में।[37] ''बड़ी चक्की का पाट'' (μύλος ὀνικός, *mulos onikos*, मूलतया ''गदहे वाला चक्की का पाट'') ''उसके गले में'' डालकर समुद्र में डुबोए जाने से बचने की बहुत कम सम्भावना होती होगी। मरते हुए व्यक्ति के पास अपने अतीत के बारे में सोचने का केवल थोड़ा सा समय होता होगा। उसके दिमाग में उसके पाप आते होंगे। उसके पास किसी ''छोटे'' को अपने कामों से ठोकर दिलाने के लिए पछतावा करने का भी समय होता होगा। डूबकर मरने को नरक की भयानकता से मिलाया जाए तो यह इतना बुरा नहीं होता होगा। विश्वास में ''छोटों'' को ठोकर दिलाना व्यक्ति को ''पत्थर बांध नदी में फैंके'' जाने के योग्य बना देता होगा।[38]

आयतें 43-48. ये आयतें हर प्रकार की बुराई से जो दूसरों को ठोकर दिलाने का कारण बनती हैं, पीछा छुड़ाने पर फोकस करती हैं। यीशु ने अपनी बात कहने के लिए कई बार अतिश्योक्ति का इस्तेमाल किया। अतिश्योक्ति किसी बात की गम्भीरता को समझाने के लिए बढ़ा चढ़ाकर दिखाई गई तस्वीर है, जैसे पाप करने से बचने के लिए हाथ काट देना (9:43; देखें मत्ती 5:30)। इसमें बहुत अधिक संदेह है कि **ठोकर खिलाए** जाने पर यीशु ने **हाथ** या **पांव** काटे जाने या **आंख** निकाले जाने की सचमुच में सिफ़ारिश की होगी क्योंकि इससे शरीर के दूसरे भाग ने पाप करने से रुक जाना था। पाप व्यक्ति के केवल हाथ या उसकी आंख से नहीं बल्कि उसके मन से निकलता है। यीशु का ध्यान हमेशा शारीरिक देहों के बजाय अपने सुनने वालों के मनों पर होता है। वह यह समझा रहा था कि कोई भी चीज़ या कोई भी बात जिसे पाप से बचने के लिए किया जा सकता है, नरक से बचने के लिए उपयुक्त बलिदान है।

हमारे सामने दो विकल्प रखे गए हैं: अनन्त जीवन और नरक। दूसरे शब्दों में यीशु गम्भीर मसलों की बात कर रहा था। नहीं तो ऐसी शिक्षा क्यों देता? अपने जीवनों को कुछ पापों से दूर रखना पीड़ादायक हो सकता है, परन्तु यदि हम स्वर्ग में प्रवेश करना चाहते हैं तो यह करना पड़ेगा। हमें पाप को जो हमें नष्ट करता है निकालने के लिए जो भी करना पड़े वह करने के लिए अपने जीवनों को जांचकर तय करना आवश्यक है।

यीशु ने नरक (या गेहन्ना) की बात की (मरकुस 9:43, 45, 47), जिसे उसने एक ऐसी जगह बताया जहां आग कभी बुझती नहीं है। मूल शब्द (γέεννα, *gehenna*) यरूशलेम की दक्षिण पश्चिम की एक तराई को कहा गया है। यह वह स्थान था जहां पर विश्वासत्याग करने वाले इस्राएलियों ने धातु का एक ''देवता'' बनाया, उसे ऊंचे स्थान पर तपाया और अपने बच्चों को इसकी बाहों में डाल दिया (देखें यिर्म. 7:31, 32; 32:35)। कुछ राजाओं ने मूर्तियों के देवता मोलेक के सामने बलिदान के रूप में इस जगह पर अपने बेटों को आग में से निकाला। अहाज और मनश्शै ने अपने कुछ बच्चों को इस आग में जलाया (देखें 2 इतिहास 28:1-3; 33:1-6)। इससे कोई संदेह नहीं कि बच्चों को जलाने के अपराध के कारण पवित्र नगर के इस बाहरी इलाके को अशुद्ध और अपवित्र स्थान माना जाता था।

समय बीतने पर, हिन्नोम की यह तराई इस्राएल के लिए कूड़ा डालने की जगह बन गई। इसमें से आग जलती रहती है। इसमें कूड़ा डलते रहने और आग में जलते रहने के कारण उसे ''गेहन्ना'' नाम दिया गया जो कि सदा के नरक के लिए उपयुक्त उपमा बन गई,[39] यदि हिन्नोम की तराई में कूड़े के ढेर की आग जलती न रहती तो इस उपमा की इतनी अधिक शक्ति नहीं रहनी थी।

मरकुस 9:43 में **आग जो कभी बुझने की नहीं** यूनानी भाषा के शब्द (ἄσβεστος, *asbestos*) से लिया गया है। मत्ती 18:8 में इसे ''अनन्त आग'' कहा गया है जिसका निश्चित रूप में अर्थ वही है। मत्ती 25:41 कहता है, ''तब वह बाईं ओर वालों से कहेगा, 'हे शापित लोगो, मेरे सामने से उस अनन्त आग में चले जाओ, जो शैतान और उसके दूतों के लिये तैयार की गई है।''' नरक की बात करते हुए किसी ने कभी इतनी कठोर भाषा का इस्तेमाल नहीं किया जितना परमेश्वर के प्रेमी पुत्र ने।

यहूदी ताल्मुड में इस विचार को बताया गया है कि ''जो पापी व्यवस्था की बातों से परहेज करता है अंत में उसे गेहन्ना मिलेगा।''[40] **नरक** में जाने के बजाय व्यक्ति को ऐसे भविष्य की खोज करनी चाहिए जिसे **जीवन** और **परमेश्वर का राज्य** कहा गया है। इस राज्य की परिभाषा यीशु द्वारा अपनी आदर्श प्रार्थना में (यह मानते हुए कि वह इब्रानी समरूपता का इस्तेमाल कर रहा था) ऐसी जगह के रूप में की गई ''जिसमें परमेश्वर की इच्छा पृथ्वी पर वैसे ही पूरी होती है जैसी स्वर्ग में।''[41] (देखें मत्ती 6:10.)

आयतें 44 और 46 में **जहाँ उनका कीड़ा नहीं मरता और आग नहीं बुझती** है। परन्तु बेहतरीन हस्तलिपियों में आयत 48 शब्द नहीं हैं।[42] ये कथन यशायाह 66:24 में से लिए गए हैं, जहां इनका इस्तेमाल इस्राएल के शत्रुओं के अंत के सम्बन्ध में हुआ है।

आग से नमकीन (9:49, 50)

[49]''क्योंकि हर एक जन आग से नमकीन किया जाएगा। [50]नमक अच्छा है, पर यदि नमक का स्वाद जाता रहे, तो उसे किस से नमकीन करोगे? अपने में नमक रखो, और आपस में मेल मिलाप से रहो।''

आयतें 49, 50. माना कि यह मरकुस में सबसे कठिन वचनों में से एक है। इसकी व्याख्या करने में एक समस्या यह है कि ''नमकीन'' और ''आग'' विचार किए जाने वाले विषय को वाक्य के बीच में लाते हुए लगते हैं। डोनल्ड इंग्लिश ने सुझाव दिया कि 9:49 ''पिछली आयतों (43-48) वाले 'आग' और अगली आयत 50 के बीच 'नमक' वाले कथनों के बीच को पुल'' है।[43] ऐसा हो सकता है।

9:49 में अनुवादों में अंतर प्राचीन हस्तलेखों के विभिन्न संस्करणों के कारण है।[44] (हिन्दी की तरह) NASB में जहां यह कहा गया है कि लोगों को **आग से नमकीन** किया जाएगा, वहीं KJV में संदेहपूर्ण वाक्यांश जोड़ा गया है ''और हर बलिदान नमक से नमकीन किया जाएगा।'' यदि ये शब्द यीशु की बात में थे, तो उसके कहने का क्या अर्थ था? क्या यह केवल एक उदाहरण था? नमक को कई प्रकार से इस्तेमाल में लाया जाता है। शायद हम कह सकते हैं कि जीवन में बहुत सी बातों के लिए नमक इतना आवश्यक था कि परमेश्वर ने इसे बलिदानों का आवश्यक भाग बनाकर इसे महत्व दिया (देखें लैव्य. 2:13; एज्रा 6:9; यहेज. 43:24)।

मैक्गार्वे द्वारा समर्थित व्याख्या ''नमकीन'' होने के विचार को पाप के अनन्त दण्ड सहने के रूप में मानती है। यानी यह दु:ख सहने की स्थिति का प्रतीक हो सकती है जो उन लोगों की है जो अपने पापों में मरते हैं। 9:48 में न बुझने वाली ''आग'' की बात करते हुए यीशु ने

उन सबको जो अपश्चात्तापी रहते हैं अनन्त काल के लिए दु:ख सहने की बात कही। मैक्गार्वे का मानना था कि ''संदर्भ से तय हो कि 'आग' का क्या अर्थ लिया जाए।'' उसने तर्क दिया कि '''आग' शब्द को नया और अलग अर्थ देने के लिए व्याख्या के अपरिवर्तनीय नियमों में से एक के साथ ज़बर्दस्ती होगी।''[45] वास्तव में यीशु ने ''आग'' के विचार का इस्तेमाल उस दु:ख सहने का संकेत देने के लिए किया, जो नरक में रहने वालों के लिए होगा। परन्तु इसे समझना आवश्यक है कि जो कोई दु:ख सहने के प्रति सही आचरण को सुधार कर लेता है और अपने पाप से मुड़ जाता है उसे इस प्रकार से ''आग से नमकीन'' नहीं किया जाएगा। इस कारण या तो आग में पीड़ा सहने की तरह अपने पापपूर्ण जीवन को बदलने की कोशिश करो या ऐसा न कर पाने के लिए कारण बाद में दु:ख सहना पड़ सकता है। दोनों का ही अर्थ सब लोगों के लिए **हर एक जन** (πᾶς, *pas*; मूल में ''सब'') के लिए होने देगा।

अनन्त विचार के विपरीत 9:49 में ''आग'' उस दु:ख सहने की ओर इशारा कर रही हो सकती है जो मसीह के अनुयायियों को इस जीवन में सहना आवश्यक है। यह शुद्ध करने वाली ''आग'' हो सकती है। यानी सताव या किसी और प्रकार का दु:ख सहना जो हमारे लिए लाभदायक हो।[46] ''आग से नमकीन'' होना घाव पर नमक लगाने के जैसा यानी दर्दनाक होगा। मसीही लोगों को सताव से या शुद्ध करने वाली मुसीबत से दु:ख सहना पड़ सकता है। रोमियों 5:3, 4 इस बुनियादी मसीही अवधारणा को बताता है: ''हम क्लेशों में भी घमण्ड करें, यह जानकर कि क्लेश से धीरज, और धीरज से खरा निकलना, और खरे निकलने से आशा उत्पन्न होती है।''

एक अर्थ में ''हर एक जन आग से नमकीन किया जाएगा'' 2 तीमुथियुस 3:12 के जैसा ही लगता है: ''जितने मसीह यीशु में भक्ति के साथ जीवन बिताना चाहते हैं वे सब सताए जाएंगे।'' जेम्स बर्टन कॉफ़मैन ने ऐसा ही विचार दिया है: ''यदि हम 'आग' को उन सतावों और क्लेशों के संदर्भ में समझें जो मसीही सफ़र के दौरान रहते हैं, तो इसका अर्थ यह हुआ कि संसार के तिरस्कार और विरोध सहे बिना किसी का भी उद्धार नहीं होगा।''[47] ''तिरस्कार और विरोध'' मसीही व्यक्ति के जीवन में कभी न कभी आ ही जाते हैं। मसीह के लिए दु:ख सहना हमें शुद्ध करने वाला होना चाहिए। 1 पतरस 4:12, 13 ''मसीह के दु:खों'' में ही व्यक्ति से सहभागी होने का संकेत देते हुए ''जो दु:ख रूपी अग्नि तुम्हारे परखने के लिए तुम में भड़की है'' की बात करता है।

अपने उपदेश के अंत में यीशु ने ''आग से'' नमकीन किए जाने विचार से बदलकर इसका सकारात्मक अर्थ दिया है। उसने कहा, **''नमक अच्छा है, पर यदि नमक का स्वाद जाता रहे, तो उसे किस से नमकीन करोगे?''** (9:50)। अपनी सेवकाई में पहले उसने अपने चेलों को बताया था कि वे ''पृथ्वी का नमक'' हैं (मत्ती 5:13); और यहां इस्तेमाल वाक्य का भी वही अर्थ होता है। उसके चेले ''अच्छा'' नमक हैं, जो कि संसार को गलने से बचाने का माध्यम हैं।

यदि नमक अपना स्वाद खो दे तो इसे किस से नमकीन किया जा सकता है? वास्तव में नमक किसी काम का नहीं रहता और इसे पांवों तले लताड़े जाने के लिए फेंक दिया जाता है (मत्ती 5:13)। मसीही व्यक्ति जिसे यह कहा जाए कि वह अब ''नमकीन'' नहीं रह गया, वह अनन्त दण्ड के योग्य है। किसी में से नमक खत्म हो जाने पर उद्धार की उसकी सारी आशा खत्म

हो जाती है। यह किसी के किसी गलती करते हुए पकड़ा जाने से अलग है जिससे उसे बाद में बचाया जा सकता हो (गला. 6:1)।

अपने में नमक रखो (9:50) का अर्थ यह लगता है कि अपने आपको दुनियादारी से दूर रखते हुए अपने आपको सिखाते हुए ''सही सोच के साथ लगे रहना'' है। यदि हम ऐसा करते हैं तो हम मसीह के साथ अपनी आशा को खोएंगे नहीं। मसीह के ''नमक'' को अपने जीवनों को भरने देकर हमें बचाकर रखने की वह सामर्थ हासिल मिल जाएगी जो उद्धार की हमारी आशा को बनाए रखती है।

यीशु की बात 9:42-48 के विचार से भी जुड़ती होगी कि हम कुछ ऐसा न करें जो किसी भाई के लिए ठोकर का कारण हो। चेले स्वयं इस पर बहस कर रहे थे कि ''हम में से बड़ा कौन है'' (9:34)। ''नमकीन'' होने का अर्थ विनम्र होना और अपने भाइयों के साथ मेल मिलाप की इच्छा करना है। हम **आपस में मेल मिलाप से** तभी रहेंगे यदि दूसरों के साथ अपनी बातचीत में हमने अपने आप को अच्छी तरह से ''नमकीन'' किया है। किसी कलीसिया के लिए ''नमक'' के न होने से बढ़कर विनाशकारी बात और कोई नहीं हो सकती। परन्तु ''नमक'' लगे मसीही बोलचाल के लिए कूटनीतिक इस्तेमाल करते हैं जो मेल मिलाप बनाए रखने या फिर से बनाने के लिए काम आती है।

यदि हमारे शब्द अच्छी तरह से ''नमकीन'' हैं तो हम मसीह के लिए दूसरों पर अच्छा असर डाल सकते हैं (कुल. 4:6)। अपने जीवनों में ''नमक'' बनाए रखकर ''यीशु के चेले एक-दूसरे के साथ आसानी से मेल मिलाप से रह सकते हैं''[48] और अपने उद्धार के साथ-साथ अपने प्रभाव को बनाए रख सकते हैं।

इस वचन में हमें मिली जुली कई बातें देखने को मिल सकती हैं जो ''नमक'' की अलग-अलग प्रासंगिकताओं को दिखाती हैं। संक्षेप में यह वचन ''नमक'' के अलग-अलग इस्तेमालों के लिए दिया गया लगता है, जिस कारण इसकी व्याख्या इस प्रकार हुई है।[49]

प्रासंगिकता

राज्य का आना (9:1)

मरकुस 8 के अंत के निकट, यीशु ने चेला होने के शब्दों और विशेषताओं की अपनी चर्चा को समाप्त किया। वहां आकर उसने स्वर्ग के राज्य के आने की छोटी सी बात जोड़ दी। जिस प्रकार से हमारी बाइबलों को विभाजित किया गया है, उसमें उसकी बात को मरकुस 9 के आरम्भ में रखा गया है। अपनी पृथ्वी की सेवकाई के दौरान पहले उसने राज्य से सम्बन्धित कई संदेश दिए थे, और उनमें उसने बार-बार इसके निकट होने का संकेत दिया था।

यूहन्ना और यीशु के प्रचार का मुख्य विषय परमेश्वर का राज्य था। यूहन्ना ने यह संदेश सुनाकर उद्धारकर्त्ता के आने का मार्ग तैयार किया था। मत्ती के अनुसार, यूहन्ना ने अपनी सेवकाई का आरम्भ यह घोषणा करते हुए किया कि राज्य आ रहा है: ''उन दिनों में यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला आकर यहूदिया के जंगल में यह प्रचार करने लगा: 'मन फिराओ, क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आ गया है''' (मत्ती 3:1, 2)। यूहन्ना का संदेश राज्य के आने और परमेश्वर के

सामने मन फिराने के दो विषयों पर केन्द्रित रहा (देखें मरकुस 1:4)। यूहन्ना की सेवकाई के आरभ की ओर मुड़ते हुए मत्ती ने कहा कि उसके प्रचार में मुक्ति के विषय के रूप में राज्य के आने की बात की गई: ''उस समय से यीशु ने प्रचार करना और यह कहना आरम्भ किया, 'मन फिराओ क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आया है''' (मत्ती 4:17)।

अपनी सेवकाई के आरम्भ में, यीशु ने राज्य के आने का प्रचार किया। अपनी सेवकाई के बीच में, वह इसका प्रचार करता रहा। अपनी सेवकाई के अंत में, वह अभी भी इसका प्रचार कर रहा था (मरकुस 1:15; 9:1; मत्ती 25:1)। अपने जी उठने के बाद उसने अपने प्रेरितों को बताया कि कुछ ही दिनों में ज़बर्दस्त घटनाएं होने वाली थीं (देखें प्रेरितों 1:5)। लूका ने जी उठने के बाद के चालीस दिनों के दर्शनों का वर्णन राज्य के बारे में बताने के समयों के रूप में किया: ''उसने दु:ख उठने के बाद बहुत से पक्के प्रमाणों से अपने आप को उन्हें जीवित दिखाया, और चालीस दिन तक वह उन्हें दिखाई देता रहा, और परमेश्वर के राज्य की बातें करता रहा'' (प्रेरितों 1:3)। यीशु अपने चेलों के पास जिस अंतिम आशा को छोड़ना चाहता था वह यह समझ थी कि राज्य निकट है।

रूपांतर के वर्णन से पहले, तीनों सहदर्शी लेखकों ने यीशु को अपने प्रेरितों को यह याद दिलाते हुए दिखाया कि राज्य आ रहा है (मरकुस 9:1; मत्ती 16:28; लूका 9:27)। विचार के प्रवाह में थोड़ी सी बात का मिलाए जाने से अर्थात यीशु द्वारा याद दिलाए जाने में ये सच्चाइयां मिलती हैं कि राज्य कैसे आना था।

1. उसने संकेत दिया कि राज्य ने उन *प्रतिज्ञाओं के अनुसार* आना था जो उसके बारे में की गई थीं। यीशु ने अपने सुनने वालों को उन बातों की ओर ध्यान दिलाने को याद रखने के लिए जो वह उन्हें बता रहा था, अपने पसंदीदा वाक्यांश ''मैं तुम से सच कहता हूं'' (मरकुस 9:1) का इस्तेमाल किया। राज्य के आने की स्पष्ट प्रतिज्ञाएं की गई थीं। पहाड़ी उपदेश में उसने राज्य के लोगों की खूबियों को दिखाया था। यीशु के दृष्टांतों में अधिकतर राज्य के स्वभाव तथा गुणों से सम्बन्धित हैं (उदाहरण के लिए, देखें 4:26-34)।

यीशु ने कभी किसी को गलत रास्ता नहीं दिखाया। उसके लिए राज्य के बारे में लोगों के साथ झूठ बोलना असम्भव था। हमारे लिए जिस भविष्य का वर्णन उसने किया है वह भविष्यद्वाणी के अनुसार ही होगा, और यह इसकी नबूवत की बातों के साथ मेल खाता होगा। राज्य के आने की भविष्यद्वाणी की गई थी; और पिन्तेकुस्त वाले दिन राज्य आ गया, जैसा कि प्रेरितों 2 से पता चलता है।

2. यीशु ने आगे बताया कि राज्य ने *परमेश्वर के समय के अनुसार* आना था। राज्य के बारे में यूहन्ना के और यीशु के शब्द हमेशा समय की बात करते थे, जैसे ''निकट'' (लूका 10:9, 11; 21:31), ''निकट'' (मत्ती 3:2; 4:17; 10:7; मरकुस 1:15), या ''थोड़े दिनों के बाद'' (प्रेरितों 1:5)।

मरकुस 9:1 में यीशु पहले से अधिक स्पष्ट था जहां उसने कहा कि वहां खड़े कुछ लोगों में से कइयों ने तब तक मृत्यु का स्वाद नहीं चखना था जब तक उन्होंने राज्य को सचमुच में न देख लेना था। ''मृत्यु का स्वाद'' वाक्यांश मृत्यु होने की बात करने का प्रतीकात्मक ढंग है यानी उनमें से जो उसे सुन रहे थे, कइयों ने तब तक नहीं मरना था, जब तक राज्य आ न जाना था।

उन्होंने इसके गवाह बनना था और उन्हें इसमें प्रवेश करने का अवसर मिलना था।

3. यीशु ने यह भी कहा कि राज्य ने *आत्मा की सामर्थ के अनुसार* आना था। जब उसने कहा कि लोगों ने इसे ''सामर्थ'' सहित आया हुआ देखना था (9:1), तो वह पवित्र आत्मा की सामर्थ की बात कर रहा था।

अपने जी उठने के बाद, यीशु अपने प्रेरितों के साथ था और उन्होंने उससे पूछा कि क्या इस्राएल को राज्य फेर देने का समय आ गया है (देखें प्रेरितों 1:6)। यीशु ने उन्हें बताया कि वह उन्हें समय नहीं बता सकता, परन्तु वह उनसे यह कह सकता है: ''जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ्य पाओगे; और यरूशलेम और सारे यहूदिया और सामरिया में, और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होगे'' (प्रेरितों 1:7, 8)।

उसने अपने प्रेरितों से कहा कि तब तक यरूशलेम में ठहरे रहें जब तक उन्हें ऊपर से सामर्थ नहीं मिल जाती (देखें प्रेरितों 1:4)। वे उस काम के जो परमेश्वर उनसे करवाना चाहता था, तब तक नहीं कर सकते थे जब तक उन्हें पवित्र आत्मा के द्वारा सामर्थ नहीं दी जानी थी। उन्हें वह सामर्थ तब मिलनी थी, जब पवित्र आत्मा उन पर उतरना था; उसने प्रेरितों को बिना किसी गलती के प्रचार करने के योग्य बनाना था। लोग इकट्ठा होने थे, प्रेरितों ने पवित्र आत्मा की अगुआई में प्रचार करना था और सुनने वालों ने सुसमाचार की आज्ञा मानकर संदेश को ग्रहण करना था। इस प्रकार से कलीसिया अर्थात राज्य या परमेश्वर के परिवार का जन्म होना था। यह सब यीशु के पुनरुत्थान के बाद वाले पिन्तेकुस्त के पहले दिन हुआ (प्रेरितों 2)।

निष्कर्ष: यीशु ने अपने सामने आए लोगों को बताया कि राज्य आ रहा है। हम कल्पना कर सकते हैं कि उसके शब्दों का उसके सुनने वालों में क्या अर्थ होगा! उनके लिए भविष्यद्वाणी के इस पूरा होने का भाग बनना कितना रोमांच से भरा रहा होगा।

इस होने वाली घटना के बारे में दानिय्येल ने भविष्यद्वाणी की थी। उसने कहा था कि रोमी राजाओं के दिनों में, स्वर्ग के परमेश्वर ने अपना राज्य स्थापित करना था। यह राज्य अनन्तकाल तक रहने वाला होना था (दानिय्येल 2:44)। पुराने नियम के समय में नबी परमेश्वर के राज्य की बात इस्राएल जाति के रूप में करते थे। ये शब्द सही, थे बातें सही थीं और इस्राएल जाति परमश्वेर को अपने राजा और हाकिम के रूप में देखती थी। परन्तु कुछ नया यानी नई किस्म का राज्य आने वाला था। यह राज्य आत्मिक होना था और इसे ''मसीह की कलीसिया,'' ''मसीह की देह,'' या ''परमेश्वर का घराना'' भी कहना सही होना था।[50]

पिन्तेकुस्त वाला दिन आने राज्य आ गया। इसकी स्थापना तब हुई जब हज़ारों लोगों ने सुसमाचार की आज्ञा को माना और पवित्र आत्मा ने उन्हें उस राज्य अर्थात कलीसिया में मिला लिया (देखें प्रेरितों 2:41)। उस दिन के बाद अब तक, परमेश्वर का, अर्थात मसीह का अर्थात स्वर्ग का राज्य संसार भर में फैल रहा है। यह अब आज भी परमेश्वर का राज्य है। यह कभी नष्ट नहीं होगा, इसकी जगह कोई और नहीं होगा या इसे हटाया नहीं जाएगा। जो लोग इसमें आते हैं और इसमें बने रहते हैं उन्हें अनन्त जीवन का आनन्द मिलेगा। हम या तो इस अनन्तकाल के राज्य का भाग बनकर रहेंगे या हम सदा के लिए चाहेंगे कि काश हम इसमें होते।

यीशु परमेश्वर का महिमायुक्त पुत्र (9:2-8)

यीशु की पृथ्वी की सेवकाई में, यहां आकर उसके परमेश्वर होने की सच्चाई प्रेरितों को और स्पष्ट हो चुकी थी। मरकुस 8:29 में पतरस ने कैसरिया फिलिप्पी में अंगीकार के रूप में अपने पक्के विश्वास को बता दिया था। उसके दस शब्दों (NASB [और हिन्दी - अनुवादक] के साथ-साथ यूनानी) में अब तक के सबसे बड़ी बुनियादी सच्चाइयों में से एक को व्यक्त करते हैं: ''तू जीवते परमेश्वर का पुत्र मसीह है'' (मत्ती 16:16)।

यीशु परमेश्वर-मनुष्य अर्थात परमेश्वरत्व में से दूसरा था, जो मनुष्य बना था, इस कारण बाइबल में हमें अलग-अलग जगहों पर उसके व्यक्तित्व के दोनों गुणों को देखने की उम्मीद होनी थी। यही कारण है कि सुसमाचार के विवरणों को उसके परमेश्वर और मनुष्य होने के बीच के विवरण में आगे पीछे जोड़ने पर हमें कोई आश्चर्य नहीं होता है।

सुसमाचार के विवरणों में चाहे उसके परमेश्वर होने पर ज़ोर दिया गया है, पर उसकी पृथ्वी की सेवकाई में काफ़ी देर तक उसके इस पहलू को नहीं दिखाया गया। आरम्भ से ही बलपूर्वक प्रचार करना बहुत अधिक हो जाना था; लोगों को अपने दिलों के साथ-साथ अपने दिमागों के साथ इस बड़ी सच्चाई को समझने देने के लिए धीरे-धीरे और बड़ी सावधानी से बताया जाना आवश्यक था।

पतरस के अंगीकार के छह दिनों बाद, यह समय पूरा हो गया था यानी वह घड़ी आ चुकी थी जब ईश्वरीय वर्णन का समय आ चुका था कि यीशु कौन है। यह प्रकाशन यीशु के रूपांतर के द्वारा दिया गया (9:2-8)। इस घटना के पहलुओं को कोई भी मनुष्य समझ नहीं सकता। कोई भी इससे उठने वाले प्रश्न का उत्तर नहीं दे सकता; परन्तु जो कुछ हुआ उसकी बुनियादी रूपरेखा को समझा सकता है।

यीशु से सम्बन्धित सबसे बड़ी सच्चाई जो इससे पता चलती है, वह उसका महिमा से भरा होना है। वह सचमुच में उस सारी महिमा में जो पिता के पुत्र में होनी आवश्यक है, परमेश्वर का पुत्र है। बाइबल उसमें दो क्षेत्रों अर्थात पृथ्वी और स्वर्ग के इकट्ठा होने को दिखाती है। इस वचन को पढ़ते हुए हम परमेश्वर के पुत्र यीशु, मूसा और एलिय्याह, परमेश्वर पिता और तीनों प्रेरितों की उपस्थिति में, पवित्र भूमि पर खड़े हैं। यह दृश्य हमारी समझ को परमेश्वर की महिमा और यीशु के परमेश्वर होने के प्रताप से भर देता है।

1. *यीशु का प्रताप रूपांतर में दिखाई दिया।* यीशु पहाड़ पर पतरस, याकूब और यूहन्ना को साथ ले गया था (9:2)। हमें यह पता नहीं है कि पहाड़ कौन सा था। पतरस का अंगीकार कैसरिया फिलिप्पी के इलाके में हुआ था। यह टोली पलिश्तीन के उत्तरी भाग के ऊंचे पहाड़ों में से किसी पहाड़ पर गई होगी। सबसे बढ़िया अनुमान यह है कि वे हर्मोन पहाड़ की कुछ चढ़ाई चढ़े होंगे।

यीशु ने अपने नौ प्रेरितों को नीचे तराई में रहने दिया और जो बातें होने वाली थीं उनके गवाह बनने के लिए तीन जनों को साथ ले आया। मत्ती, मरकुस और लूका ने सुसमाचार के अपने विवरणों में इस क्षण को लिखा और तीनों ने वे बातें शामिल कीं जो दूसरों ने नहीं बताईं। उदाहरण के लिए लूका ने कहा कि यीशु इन्हें ''प्रार्थना के लिए पहाड़ पर'' ले गया (लूका 9:28)। वे पहाड़ पर सम्भवतया एकांत जगह में परमेश्वर से प्रार्थना में रात बिताने के इरादे से गए थे। जब

उन्हें रुकने की एक जगह मिली तो वे प्रार्थना करने की तैयारियां करने लगे। शायद यीशु प्रेरितों को छोड़कर उनसे कुछ दूरी से अकेले में प्रार्थना करने के लिए चला गया। दिन काफी लम्बा था और थके हुए प्रेरितों को झपकी लग गई (लूका 9:32।

लूका ने यीशु के लिए कहा, ''जब वह प्रार्थना कर ही रहा था, तो उसके चेहरे का रूप बदल गया, और उसका वस्त्र श्वेत होकर चमकने लगा'' (लूका 9:29)। मरकुस ने उसके कपड़ों की चमक का वर्णन किया: ''वहाँ उनके सामने उसका रूप बदल गया, और उसका वस्त्र ऐसा चमकने लगा और यहाँ तक उज्ज्वल हुआ, कि पृथ्वी पर कोई धोबी भी वैसा उज्ज्वल नहीं कर सकता'' (मरकुस 9:2, 3)। मत्ती ने भी उसके चेहरे का वर्णन किया: ''उसका मुंह सूर्य के समान चमका और उसका वस्त्र ज्योति के समान उज्ज्वल हो गया'' (मत्ती 17:2)।

स्पष्टतया यह रूपांतर यीशु की प्रार्थना के लिए पिता का उत्तर था। उसने क्या विनतियां की थीं? बाइबल यह नहीं बताती, परन्तु संदर्भ से पता चलता है कि उसने प्रेरितों से अभी-अभी बात की थी कि उसका यरूशलेम में जाना और मार डाले जाना कैसे आवश्यक था (मरकुस 8:31)। इसलिए उत्तर यही पुष्टि करने के लिए होगा कि यीशु कौन है और वह पृथ्वी पर क्या करने के लिए आया है और स्वर्ग की ओर उसकी आने वाली मृत्यु का महत्व याद दिलाया गया। यीशु की महिमा वहां उपस्थित लोगों को दिखाई गई। स्वर्ग से आए इन दो जनों के द्वारा क्रूस का अर्थ भी समझाया गया। वह रात यीशु के परमेश्वर होने और संसार के उद्धार के लिए उसकी मृत्यु के महत्व से चमक उठी थी।

2. *यीशु की महिमा जो मूसा और एलिय्याह के साथ उसकी उस बातचीत में सामने आई।* मरकुस ने कहा, ''और उन्हें मूसा के साथ एलिय्याह दिखाई दिया; वे यीशु के साथ बातें करते थे'' (9:4)। अकेले लूका ने इस बातचीत के विषय को विस्तार से बताया: ''और देखो, मूसा और एलिय्याह, ये दो पुरुष उसके साथ बातें कर रहे थे। ये महिमा सहित दिखाई दिए और उसके मरने की चर्चा कर रहे थे, जो यरूशलेम में होनेवाला था'' (लूका 9:30, 31)।

यह मानवीय आंखों और कानों द्वारा देखी और सुनी जाने वाली सबसे शानदार बातचीतों में से एक है। मूसा, जिसके द्वारा परमेश्वर ने इस्राएलियों को व्यवस्था दी थी, को इस विशेष अवसर पर यीशु के साथ प्रोत्साहित करने वाली बातें करने के लिए स्वर्गलोक से लाया गया था। परमेश्वर के पुराने नियम के नबी एलिय्याह को जिसने लगभग अकेले इस्राएलियों को अहाब और इज़ेबेल की दुष्टता से बचा लिया था और जिसे बवण्डर में से स्वर्ग में उठा लिया गया था (देखें 1 राजा. 18; 2 राजा. 2:11) भी यीशु के साथ उस पर जो होने वाला था बातचीत करने के लिए वहां था।

लूका कहता है कि वे ''उसके विदा होने की चर्चा कर रहे थे जो यरूशलेम में होने वाला था'' (9:31)। यीशु मूसा और एलिय्याह के साथ चर्चा कर रहा था कि उसके यरूशलेम में प्राचीनों, महायाजकों और शास्त्रियों के सामने जाने पर क्या होना था। इस बातचीत का आधार यह सच्चाई है कि यीशु की मृत्यु पुराने नियम के पूरे युग में परमेश्वर द्वारा किए जाने वाले सब अचम्भों और कामों से बढ़कर होनी थी।

यीशु की प्रार्थना का उत्तर क्रूस को हटा देने का वायदा नहीं था। बल्कि परमेश्वर का जवाब वह शक्ति और सहारा था जो यीशु को कठिन घड़ी में उसकी हिम्मत बढ़ाने के लिए आवश्यक होना था। उसने यीशु के साथ परमेश्वर की योजना में क्रूस के मुख्य स्थान की चर्चा करके उसके

मन को धीरज देने के लिए दो नबियों को भेजा: क्रूस पर यीशु की मृत्यु से नबूवती युगों की शिक्षाओं का पूरा होना था और लेवियों को बलिदान की प्रणाली का सबसे बढ़कर पूरा होना था। यह बातचीत इस बात को याद दिलाती थी कि मनुष्यजाति के लिए आत्मिक लाभों में उसकी मृत्यु का क्या अर्थ होना था। यह सुनकर कि क्रूस पवित्र लोगों का और परमेश्वर की स्वर्गीय सेना में स्वर्गदूतों का फोकस था, उसके मन को तसल्ली मिली होगी।

लूका 9:31 में यीशु के ''मरने'' के लिए इस्तेमाल हुआ यूनानी शब्द ἔξοδος (*exodus*) है। यह शब्द उसकी मृत्यु को त्रासदी के रूप में नहीं बल्कि रिहाई के रूप में दिखाता है। क्रूस पर उसके बलिदान से मनुष्यजाति के लिए खून से खरीदा गया छुटकारा मिलना था; इसने पाप के चंगुल में फंसे लोगों के लिए उद्धार उपलब्ध करवाना था। मूसा और एलिय्याह के साथ यीशु की बातचीत में, उसकी महिमा ऐसे दिखाई गई जैसे पहले कभी नहीं दिखाई गई थी। यरूशलेम जाने के लिए अपने आपको तैयार करते हुए उद्धारकर्त्ता के पास स्वर्ग से और पृथ्वी से लोग आए।

3. *हमारे प्रभु की महिमा उसके पिता के द्वारा उसे अपने पुत्र के रूप में पहचानने में दिखाई गई।* जब तीनों चेलों की नींद खुली तो उन्होंने यीशु को अपने प्रतापी, स्वर्गीय चमक में मूसा और एलिय्याह के साथ बातें करते हुए देखा (लूका 9:32)। वह यीशु की महिमा और स्वर्ग से आए लोगों को देखकर भय से भर गए (लूका 9:32)। जब मूसा और एलिय्याह जाने लगे (लूका 9:33), तो पतरस ने यीशु से कहा, ''हे रब्बी, हमारा यहाँ रहना अच्छा है: इसलिये हम तीन मण्डप बनाएँ; एक तेरे लिये, एक मूसा के लिये, और एक एलिय्याह के लिये'' (मरकुस 9:5)। पतरस भयभीत हो गया था और परेशान था और उसे समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या करे (9:6)।

साफ है कि पतरस को लगा होगा कि उन्हें याद रखना चाहिए कि उस जगह पर क्या हुआ था। उसने सुझाव दिया कि वे यीशु के लिए और उसके साथ दिखाई देने वाले दोनों के लिए एक मण्डप, यानी तम्बू जैसा कुछ बनाए। यदि दूसरे दो प्रेरित पतरस के जैसे ही थे, तो तीनों को इस बात की समझ नहीं आई थी कि जो कुछ उन्होंने देखा है उसका कया अर्थ है। उन्हें इसका अर्थ समझने के लिए समय लगना था।

फिर परमेश्वर ने दखल दिया: ''तब एक बादल ने उन्हें छा लिया, और उस बादल में से यह शब्द निकला, 'यह मेरा प्रिय पुत्र है, इसकी सुनो''' (9:7)। पिता ने स्वर्ग से जो कुछ कहा, मत्ती में उसका पूरा विवरण है: ''यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिस से मैं प्रसन्न हूं: इस की सुनो'' (मत्ती 17:5)। ऐसा लगता है कि बात पुराने नियम की तीन प्रमुख विभाजनों व्यवस्था (व्यव. 18:15), भविष्यद्वक्ताओं (यशा. 42:1), और भजन (भजन 2:7) में से ली गई है। इस प्रकार से पिता ने पूरे पुराने नियम के अधिकार तथा प्रेरणा की गवाही दी और उसने यह गवाही दी कि मसीह पुराने नियम की पुस्तकों के तीनों भागों का पूरा होना था।

जब वहां छाया हुआ बादल हट गया, तो तीनों चेलों ने आस पास देखा परन्तु उन्हें यीशु को छोड़ और कोई दिखाई नहीं दिया (मरकुस 9:8)। मूसा और एलिय्याह अलोप हो गए थे और केवल यीशु वहां था। यीशु की मृत्यु के द्वारा व्यवस्था पूरी होने वाली थी और नबियों की पुस्तकों में लिखी गई भविष्यद्वाणियां पूरी हो रही थीं। इन्होंने अपनी सनातन मंशा को पूरा किया था और अब राज्य के आने की तैयारी के कई लम्बे वर्ष खत्म होने वाले थे। यीशु की मृत्यु नये युग का

आरम्भ होनी थी जिसे हम ''मसीही युग'' कहते हैं।

निष्कर्ष: इस वचन में हमें क्या देखने की आशीष मिली है? हमने रूपांतर में मसीह की महिमा को देखा है जिसमें यीशु का चेहरा चमक के साथ जगमगा गया। हमने इसे आने वाले क्रूसारोहण के महत्व के बारे में यीशु के साथ मूसा और एलिय्याह के बातें करने में देखा है। हमने इसे परमेश्वर के पुत्र के रूप में यीशु की पहचान के रूप में देखा है, जो छाए हुए बादल में से परमेश्वर की आवाज के द्वारा करवाई गई।

हां, हमने अनोखे और प्रामाणिक ढंग से यीशु की महिमा को देखा है, परन्तु इसका अर्थ क्या है? मुख्य सबक में दो बातें हैं। रूपांतर से यह सच्चाई साबित हुई और पक्की हो गई कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र है। इसके अलावा इसमें इस सच्चाई पर भी ज़ोर दिया गया कि इस युग में यीशु परमेश्वर की आवाज़ है। पिता ने कहा, ''इसकी सुनो'' (मरकुस 9:7)। इब्रानियों 1:1, 2 पिता की बात को दोहराता है: ''पूर्व युग में परमेश्वर ने बाप-दादों से थोड़ा-थोड़ा करके और भांति-भांति से भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा बातें कर इन अन्तिम दिनों में हमसे पुत्र के द्वारा बातें कीं।''

इस घटना से अतिरिक्त सच्चाइयां दिखाई गई हैं, और हम उन्हें न भूलें। यह पक्की बात है कि मूसा और एलिय्याह के साथ यीशु के बातें करने से यह पक्का हो गया कि उसकी मृत्यु सबसे महत्वपूर्ण होनी थी। इस दृश्य में हमारे सामने सच्चाई का प्रकाश यह है कि परमेश्वर प्रोत्साहन देने वाला परमेश्वर है। उसने यीशु को अपनी मृत्यु के सनातन महत्व का भरोसा दिलाने के लिए यह अविश्वसनीय घटना दी। हमें याद दिलाया जाता है कि हम अनन्तकालिक जीव हैं। इन महान लोगों की आत्माओं को परमेश्वर की सनातन मंशा में उसके पुत्र की परीक्षा की घड़ी में उसे प्रोत्साहन देने के लिए, अनन्तकाल से बुलाया गया था।

मसीही लोगों को यकीन दिलाने के लिए रूपांतर का यह दृश्य यीशु की मृत्यु, पुनरुत्थान और स्वर्गारोहण के बाद चौथे नम्बर पर आता है। यह वचन उस जगह को दिखाता है जहां हमें आम तौर पर यह विचार करने के लिए खड़े होना चाहिए कि यीशु के बारे में हमें क्या पता होना आवश्यक है। इससे हमें यीशु के परमेश्वर होने में पक्का विश्वास हो जाना चाहिए। 2 पतरस 1:17 में पतरस ने लिखा कि उसने यीशु के लिए कही परमेश्वर की इस बात को सुना था कि ''यह मेरा प्रिय पुत्र है जिससे मैं प्रसन्न हूं।'' पतरस, याकूब, और यूहन्ना ने उस आवाज को सुना था, और अब हमने भी सुन लिया है।

सच्चाई का सामना करना (9:9-13)

पिछली रात को यीशु को रूपांतर के द्वारा, मूसा और एलिय्याह के साथ बातचीत करने के द्वारा और स्वर्गीय पिता के द्वारा स्वर्ग से उसके बारे में महिमायुक्त सच्चाई की घोषणा के द्वारा कि ''यह मेरा प्रिय पुत्र है ...!'' (9:7) महिमा दी गई थी।

अब यीशु, पतरस, याकूब और यूहन्ना दूसरे नौ प्रेरितों से फिर से मिलने के लिए पहाड़ से नीचे जा रहे थे (9:9)। चलते-चलते यीशु को अपने नज़दीकी लोगों के साथ बात करने और उन्हें यह समझने में सहायता करने का अवसर मिल गया कि स्वर्ग की ओर से उन्हें दी गई इस ज़बर्दस्त जानकारी का उन्होंने क्या करना था। उन्हें सब सच्चाइयों में से बड़ी सच्चाई दिखाई गई थी। उन्होंने यीशु को उसके प्रताप में देखा था। उन्होंने प्राचीनकाल के दो अगुओं को देखा था

जो आत्माओं के संसार से लौटे थे और परमेश्वर के पुत्र के साथ ''उसके मरने की चर्चा कर रहे थे जो यरूशलेम में होने वाला था'' (लूका 9:31)। उन्होंने परमेश्वर को खुद बात करके यीशु के अपना पुत्र होने की पुष्टि करते हुए सुना था।

स्पष्टतया, जो कुछ उन्होंने देखा और सुना था उसके बारे में उन्हें यीशु की अगुआई की आवश्यकता थी। उसने उनके प्रश्नों के उत्तर देकर उन्हें उस हैरान करने वाली जानकारी के लिए तैयार करना था जो उनके मनों में चल रही थी। जो कुछ उसने उन्हें सच्चाई को मानकर उससे व्यवहार करने के बारे में बताया, उस पर ध्यान देते हुए हम उनके साथ की गई उसकी चर्चा को देखते हैं। हम इसे इस बात के सबक के रूप में देख सकते हैं कि सच्चाई का सामना करने पर क्या करें।

1. यीशु ने प्रेरितों को बताया कि *वे सच्चाई की शक्ति का सामना करें*। मरकुस ने कहा, ''पहाड़ से उतरते समय उसने *उन्हें आज्ञा* दी कि जब तक मनुष्य का पुत्र मरे हुओं में से जी न उठे, तब तक जो कुछ तुम ने देखा है वह किसी से न कहना'' (9:9)।

जो प्रकाशन उन्होंने देखा था उससे उस सबसे बड़ी सच्चाई की पुष्टि हुई जो संसार ने कभी देखी या सुनी थी। उन्हें इसका सम्मान करना आवश्यक था। उन्हें इसकी इतनी समझ नहीं थी कि वे इसकी चर्चा दूसरों के साथ कर सकें। बाद में उन्हें इसके बड़े महत्व का पता चल जाना था।

इन्हीं कारणों से, यीशु ने उन्हें उस सच्चाई को जो उनके दिमाग में था वह क्या है अपने मुर्दों में से जी उठने तक किसी को न बताने की आज्ञा दी। जो कुछ पहाड़ पर हुआ था वह मसीह के परमेश्वर होने के प्रमाण का महत्वपूर्ण भाग था। परमेश्वर ने चाहा कि यह घटना सुसमाचार के विवरणों का भाग हो, जो उस प्रमाण का भाग है जो यह पुष्टि करता है कि यीशु वही था जो उसने कहा कि वह है।

2. यीशु ने इन प्रेरितों को यह भी याद दिलाया कि *उन्हें सच्चाई के पहलुओं का सामना करना पड़ना था*। उन्होंने एलिय्याह को यीशु के साथ खड़े देखा था।

यह एलिय्याह कौन सा था? प्रेरितों ने उनसे पूछा, ''शास्त्री क्यों कहते हैं कि एलिय्याह का पहले आना अवश्य है?'' (9:11)। उन्हें भविष्यद्वाणी की इतनी जानकारी थी जिस कारण वे हैरान थे, ''यदि यह वह एलिय्याह है जो आने वाला था तो हम कैसे कह सकते हैं कि वह पहले आया?'' यीशु के लिए एलिय्याह के आने के विषय को स्पष्ट करना आवश्यक था। उसे मूसा और एलिय्याह के साथ अपनी चर्चा के एक पहलू को समझाना आवश्यक था। उसने कहा, ''एलिय्याह सचमुच पहले आकर सब कुछ सुधारेगा, ...'' (9:12)। उसने उन्हें यह भी बताया कि एलिय्याह जो आने वाला था वह वास्तव में यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला ही था: ''परन्तु मैं तुम से कहता हूँ, कि एलिय्याह तो आ चुका, और जैसा उसके विषय में लिखा है, उन्होंने जो कुछ चाहा उसके साथ किया'' (9:13; देखें मत्ती 17:13)।

सच्चाई अपने साथ अनुमान भी लेकर आती है। परमेश्वर अकेला सच्चा परमेश्वर है, इसका अर्थ यह हुआ कि हम उन झूठे ईश्वरों से कुछ सम्बन्ध न रखें जिन्हें मनुष्य ने बनाया है। देह अर्थात कलीसिया केवल एक है (इफि. 4:4), इसका अर्थ यह हुआ कि हम केवल उस एक देह यानी एक कलीसिया में रहना चाहें और उसका भाग बनकर रहें। यीशु परमेश्वर का पुत्र है इसलिए हमें यह समझना आवश्यक है कि जो कुछ भी हमसे उसने कहा है वह सच है। और हमें

अपने जीवनों को उसके वचन पर आधारित बताने के लिए तैयार होना आवश्यक है। परमेश्वर के पुत्र के रूप में यीशु ने जल्द ही पृथ्वी पर के अपने जीवन से कूच कर जाना था और फिर मुर्दों में से जी उठना था। उसका पुनरुत्थान उसकी पहचान और परमेश्वर की योजना में छुटकारा दिलाने की उसकी भूमिका की पुष्टि करने में इतना सामर्थ से भरा होना था कि प्रेरितों को जिन्होंने उसके रूपांतर को देखा था, उसकी समझ आ जानी थी। तब उन्होंने इसे संसार की सबसे सार्थक घटनाओं में से एक के रूप में मानना था।

3. उस सच्चाई का जिसका संकेत यीशु दे रहा था एक और भाग यह था कि *प्रेरित ईमानदारी से सच्चाई की यथार्थता का सामना करें*। प्रमाणित हो चुकी सच्चाई सदा के लिए अजय हो जानी थी। रूप प्रतापी हो जाने, समय से आगे की बातचीत, और स्वर्गीय पहचान के द्वारा पहाड़ पर दी गई यीशु के परमेश्वर होने की गवाही के साथ उस सच्चाई को कलंकित नहीं किया जा सकता था। इस सच्चाई की प्रमाणिकता कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है, हमारे आत्मिक जीवनों का बोझ को उठा सकती है। वास्तव में, यह उस दुष्ट की सब चालों, सब आरोपों, संकेतों और सच्चाई के शत्रुओं के झूठे तर्कों के सामने टिकी रहेगी।

यीशु ने इन तीनों प्ररितों को बताया कि उसके साथ भी वही होना था जो यूहन्ना के साथ हुआ (9:12, 13)। यीशु कह रहा था, ''यूहन्ना मेरी सच्चाई का प्रचार कर रहा था और उन्होंने उसे सताया, इस कारण तुम जानते हो कि वह मुझे भी सताएंगे क्योंकि मैं लोगों के बीच में वही संदेश सुनाता हूं। वास्तव में मुझे बहुत से दु:ख दिए जाएंगे और मेरे साथ बुरा व्यवहार किया जाएगा।'' परन्तु जब ये बातें हुईं तो, उसके चेलों को परमेश्वर के साथ यीशु के एक होने की सच्चाई की यथार्थता को याद करके शक्ति मिली। यीशु के क्रूस पर चढ़ाए जाने से भी उनके विश्वास को कोई हानि नहीं हुई बल्कि यह बढ़ा ही। साबित हो जाने पर सच्चाई अपनी जगह सदा के लिए बना लेती है।

निष्कर्ष: यह सच्चाई कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है पवित्र आत्मा की ओर से हमें दिया गया सबसे सुन्दर उपहार है। वास्तव में इसमें वह सामर्थ है जिसे बड़े ध्यान से रखा जाना आवश्यक है। इसमें वे पहलू हैं जो हमें अगुआई करने वाली चमकदार रौशनी देते हैं। इसमें वह यथार्थता है कि जब हम विवाद और मृत्यु के लहरों में से चलते हैं तो यह हमें थाम लेती है। परमेश्वर की यह सच्चाई हमें एक मित्र की तरह उलझन और निराशा में से शांति, भरोसे और अनन्तकालिक आशा की ओर ले जाती है।

यीशु ने पिता से अपने प्रेरितों के लिए प्रार्थना की, ''सत्य के द्वारा उन्हें पवित्र कर: तेरा वचन सत्य है'' (यूहन्ना 17:17)। पतरस ने लिखा:

> अत: जब कि तुम ने भाईचारे की निष्कपट प्रीति के निमित्त सत्य के मानने से अपने मनों को पवित्र किया है, तो तन मन लगाकर एक-दूसरे से अधिक प्रेम रखो। क्योंकि तुम ने नाशवान नहीं पर अविनाशी बीज से, परमेश्वर के जीवते और सदा ठहरने वाले वचन के द्वारा नया जन्म पाया है (1 पतरस 1:22, 23)।

पौलुस ने बताया, ''पियक्कड़ या मारपीट करने वाला न हो; वरन कोमल हो, और न झगड़ालू, और न धन का लोभी हो। अपने घर का अच्छा प्रबन्ध करता हो, और अपने बाल बच्चों को सारी

गम्भीरता से अधीन रखता हो'' (1 तीमु. 2:3, 4)।

अपने दिल से पूछो, जैसा मैं पूछता हूं, ''उस सच्चाई के सम्बन्ध में जो मसीह ने हमें दी है, मैं कहा खड़ा हूं? क्या मुझे इसमें सामर्थ, इससे अर्थ और इसकी यथार्थता दिखाई देती है?''

नाकामी से निपटना (9:14-29)

रूपांतर के बाद यीशु और उसके तीन प्रेरित पहाड़ से नीचे गए थे (9:9)। जब वे तराई में पहुंचे तो उनका स्वागत त्रासदी और नाकामी ने किया (9:14)।

दूसरे नौ प्रेरितों के इर्द-गिर्द लोग इकट्ठा हुए थे और शास्त्री उनके साथ किसी बात पर बहस कर रहे थे जो उसके प्रेरितों ने करने की कोशिश की थी (9:14)। यीशु ने पूछा कि वे क्या चर्चा कर रहे थे (9:16)। भीड़ में से किसी ने उसे उस नाकामी के बारे में बताया जिससे उसके परिवार की आशाएं धूमिल हो गईं (9:17, 18)।

यीशु के आने से पहले, शास्त्रियों ने भीड़ को अपने हाथ में ले लिया था और प्रेरितों को फटकार रहे थे। वे प्रेरितों की नाकामी पर उन्हें बुरा भला कहते हुए यीशु के बारे में ताने दे रहे होंगे। यीशु के ये आलोचक इस लड़के को चंगा करने की प्रेरितों की नाकाम कोशिश का लाभ उठा रहे थे।

भीड़ में से एक जन यीशु के पास आया। उसने उसके सामने घुटने टेके (देखें मत्ती 17:14) और अपने गूंगे, बहरे और मिर्गी के रोगी लड़के के बारे में बताया। इस लड़के में दुष्ट आत्मा थी और उसके कारण वह इन सब तकलीफ़ों से परेशान था। लड़के का जीना बड़ा दूभर हो रहा होगा।

यीशु को तंग सोच वाले शास्त्रियों पर बड़ा अफ़सोस हुआ जो उसके और उसके प्रेरितों के काम को बदनाम करने के लिए ऐसी घटिया हरकत कर रहे थे। उन्होंने पहले यीशु को सचमुच के आश्चर्यकर्म करते हुए देखा था; परन्तु, अपने दुष्ट मनों से उन्हें लगा कि इस दुष्टात्मा को निकालने की प्रेरितों की अयोग्यता का इस्तेमाल यह कहने के लिए करना चाहिए कि वे शक्तिहीन हैं और उनका संदेश बेकार है। यीशु ने जवाब दिया, ''हे अविश्वासी लोगो, मैं कब तक तुम्हारे साथ रहूँगा? और कब तक तुम्हारी सहूँगा? उसे मेरे पास लाओ'' (9:19)।

पिता लड़के को यीशु के पास ले आया। उसके ऐसा करने पर दुष्ट आत्मा को पता चल गया होगा कि यीशु उसे निकालने वाला है; जिस पर उसने लड़के को मरोड़े देकर हिंसक ढंग से प्रतिक्रिया दी। ''वह भूमि पर गिरा, और मुँह से फेन बहाते हुए लोटने लगा'' (9:20)। इस परेशानी के बीच पिता ने यीशु से विनती की, ''यदि तू कुछ कर सके, तो हम पर तरस खाकर हमारा उपकार कर'' (9:22)। यीशु ने उत्तर दिया, ''यदि तू कर सकता है? यह क्या बात है! विश्वास करनेवाले के लिए सब कुछ हो सकता है'' (9:23)। पिता को मालूम था कि उसे विश्वास है, परन्तु उसे यह भी मालूम था कि उसके मन में संदेह और भय है। उसने विनती की, ''हे प्रभु, मैं विश्वास करता हूँ, मेरे अविश्वास का उपाय कर'' (9:24)। दूसरे शब्दों में, वह कह रहा था, ''मेरा विश्वास तुझ में है, परन्तु मेरी सहायता कर कि मैं तुझ में जो मेरा विश्वास है उस पर सचमुच में भरोसा रख सकूं और संदेह न करूं।''

इस अवसर पर पिता के विश्वास का होना आवश्यक था। यीशु ने उस आदमी को यह याद

दिलाते हुए कि ''यदि'' उसके लिए था, न कि यीशु के लिए, विश्वास उत्पन्न करने के लिए इस परिस्थिति का इस्तेमाल किया। यीशु उससे कह रहा था, ''सवाल, *यदि मैं* चंगा *कर सकता* हूं का नहीं है।'' ''सवाल तो है कि यदि *तू* विश्वास *कर सकता है*।'' यीशु के लिए जो कि सर्वशक्तिमान है, कुछ भी करना बहुत बड़ी बात नहीं होनी थी। एक अर्थ में यीशु ने कहा, ''परन्तु, यदि तू चाहता है कि मैं तेरे पुत्र को चंगा करूं तो तुझे सचमुच में मुझ पर विश्वास करना होगा।'' यीशु के लिए इस आदमी को और देखने वालों को उसमें और भी अधिक विश्वास दिलाने का अवसर मिल गया।

भीड़ बहुत हो रही थी, जिस कारण यीशु ने जल्दी से अशुद्ध आत्मा से बात की: ''हे गूँगी और बहिरी आत्मा, मैं तुझे आज्ञा देता हूँ, उसमें से निकल आ, और उसमें फिर कभी प्रवेश न करना'' (9:25)। दुष्टात्मा चिल्लाती हुई और लड़के को बहुत मरोड़कर उसे फेंककर उसमें से निकल गई। दुष्टात्मा के उसमें से निकल जाने के बाद लड़का मूर्च्छित होकर बेजान सा जमीन पर पड़ा था। ''परन्तु यीशु ने उसका हाथ पकड़ के उसे उठाया, और वह खड़ा हो गया'' (9:27)। यीशु ने केवल लड़के को चंगा नहीं किया बल्कि उसने पिता के विश्वास को मजबूत भी किया।

इस दृश्य पर सोचते रहना नाकामी की त्रासदी है। प्रेरित अपने विश्वास में नाकाम हो गए थे और उनकी नाकामी में पिता के विश्वास को प्रभावित किया था, जिस कारण अपने पुत्र की किसी भी प्रकार की चंगाई के लिए उसकी आशा जाती रही थी। नाकामी ने भीड़ का ध्यान यीशु से हटाकर प्रेरितों की कमज़ोरी की ओर भी दिला दिया। जो कुछ वहां हुआ उसे ध्यान में रखते हुए हम कह सकते हैं, ''नाकामी की सच्चाई क्या है? जब हम नाकाम होते हैं तो हमें क्या करना चाहिए?''

1. हमें *इसके प्रति आशावादी होना* चाहिए। हमें हैरानी हो सकती है कि चेले भी कभी नाकाम हुए; वह तो यीशु के साथ रहते थे और उसकी सामर्थ उनमें थी। प्रेरितों को प्रभु की ओर से सामर्थ मिली थी और उन्होंने पहले दुष्टात्मा से ग्रस्त व्यक्ति को चंगा किया था (देखें 3:15; 6:13)। वे सुसमाचार प्रचार के एक दौरे से यह आनन्द करते हुए लौटे थे कि दुष्टात्माएं उनकी आज्ञाएं मानते हुए उन लोगों में से निकल गई थीं, जिनमें वे थीं (देखें लूका 10:17)।

इस बार वे नाकाम क्यों हुए? लड़के के पिता को उम्मीद थी कि प्रेरित उसके बेटे को चंगा कर देंगे। वे उसके लिए सबसे भरोसेमंद लोग थे जिनसे वह सहायता मांग सकता था। जब वे नहीं दे पाए तो पिता को लगा कि वे कोई उम्मीद नहीं है। उनकी अयोग्यता के कारण यीशु में उसका विश्वास कम हुआ।

लोगों को कभी भी नाकामी मिल सकती है। यह सबसे अच्छे समयों में या सबसे बुरे समयों में आ सकती है। संसार पराजय से भरा हुआ है। हम नाकामी को हमारे लिए जानलेवा न बनने दें।

2. हमें *इसके बारे में दृढ़ संकल्प होना* चाहिए। क्या हम इस आदमी के लिए प्रेरितों की नाकामी उनकी परेशानी की कल्पना कर सकते हैं? लड़के को बचपन से ही यह दुष्टात्मा सताती थी। वह अपने आपे में नहीं रहता होगा और माता-पिता भी उसे वश में नहीं कर पाते थे। जब प्रेरित नाकाम हो गए तो पिता गहरी निराशा में डूब गया।

यीशु के पास आने पर पिता को यह पता नहीं था कि वह उस पर विश्वास करे या न। जब

यीशु ने उसमें दिलचस्पी दिखाई तो वह रहम के लिए कहने लगा (मत्ती 17:15)। यीशु के आने से अपने पुत्र के चंगा होने की उसकी उम्मीद फिर से जाग उठी।

नाकाम होने पर हम निराश न हों। यह दु:खी करती है परन्तु हम अपने आप से कहें, ''मैं उम्मीद को लूंगा, क्योंकि यह तो केवल थोड़ी देर की बाधा है।''

3. हमें *इसके बारे में आत्मिक होना* चाहिए। यह आदमी प्रेरितों की नाकामी से मायूस था, परन्तु वह इतना समझदार था कि वह अपनी परेशानी को यीशु के पास ले गया। उसने उससे कहा, ''हे गुरु, मैं अपने पुत्र को, जिसमें गूँगी आत्मा समाई है, तेरे पास लाया था। ... मैं ने तेरे चेलों से कहा कि वे उसे निकाल दें, परन्तु वे निकाल न सके'' (मरकुस 9:17, 18)। जब उसे यह पता चला कि चंगाई के लिए उसका कुछ विश्वास आवश्यक है तो उसने और मज़बूती से विश्वास करने का मन बनाया: ''बालक के पिता ने तुरन्त गिड़गिड़ाकर कहा, 'हे प्रभु, मैं विश्वास करता हूँ, मेरे अविश्वास का उपाय कर''' (9:24)।

यीशु के पास इस आदमी के अविश्वास और प्रेरितों की अयोग्यता का उत्तर था: ''यह जाति बिना प्रार्थना किसी और उपाय से नहीं निकल सकती'' (9:28, 29)। यीशु के अनुसार, प्रेरितों के पास इसका उत्तर था, परन्तु उन्होंने इसका इस्तेमाल करने की अनदेखी की थी।

निष्कर्ष: हमने नाकामी का एक पक्का उत्तर देखा है कि हम इसका सामना यीशु में विश्वास के साथ किया जाए।

अकेले में यीशु ने एक शब्द में बताते हुए प्रेरितों की नाकामी का कारण ''प्रार्थना'' बताया। यीशु ने अभी थोड़ी देर पहले ही अपनी आने वाली मृत्यु के बारे में बताया था। इस बातचीत से वे अपने भविष्य और अपने काम के बारे में उलझन में पड़ गए होंगे। कुछ हद तक वे यीशु के बारे में भी निरुत्साहित हुए होंगे। उन्होंने इस लड़के के ऊपर प्रार्थना की होगी परन्तु शायद जोश की कमी के कारण आधे अधूरे मन से की गई प्रार्थना करने के कारण उनका विश्वास नाकाम हो गया था और वे सामर्थ विहीन थे। इसी कारण वे उस दुष्टात्मा को जो लड़के में थी, निकाल नहीं पाए। यह दृश्य दीन करने वाला और शिक्षा देने वाला है, प्रार्थना न करना हमेशा आत्मिक जीवन के कमज़ोर होने का कारण होता है और अंत में यह नाकामी का कारण बन जाता है।

भविष्य के लिए प्रबन्ध (9:30-32)

दु:ख सहने की दूसरी पेशनगोई जो यीशु ने अपने प्रेरितों के पास की, वह 9:30-32 में बताई गई है। उसकी पहली पेशनगोई 8:31-33 में दी गई थी और दूसरी 10:32-34 में मिलती है। दु:ख सहने का प्रत्येक विवरण संक्षिप्त है और उसके यरूशलेम के धार्मिक अगुओं के हाथ सौंपे जाने, उसकी मृत्यु और उसके पुनरुत्थान के तीन विषयों से लदा पड़ा है। उनमें बहुत कम अंतर दिखाई देते हैं। यह अंतर इस बात पर ज़ोर देता है कि उसने ''मनुष्य के हाथों में पकड़वाया'' जाना था (9:31), जो कि यहूदा द्वारा उसके पकड़वाए जाने का गुप्त हवाला हो सकता है।

यीशु और उसके प्रेरित कैसरिया फिलिप्पी के इलाके, फलस्तीन के उत्तरी भाग में से निकलकर गलील में आए थे और इधर से निकल रहे थे (9:30)। गलील में से यह जाने का उद्देश्य यीशु को अपने प्रेरितों को आवश्यक निजी शिक्षा देने का अवसर देना था। वह उनके साथ

यरूशलेम में अपनी आने वाली मृत्यु के बारे में फिर से बात करना चाह रहा था।

यह समझ में आता है क्योंकि यीशु अपने मिशन के बारे में गम्भीर था। उसने इसके लिए आवश्यक बुनियादी काम करने के लिए बहुत समय दिया। जब उसने देखा कि पृथ्वी पर उसके जीवन के खत्म होने का दिन निकट आ रहा तो अपने मिशन के उसी समय पूरा किए जाने और जारी रखने के लिए प्रबन्ध करने के लिए और अधिक ध्यान दिया।

प्रभु के सेवकों के लिए यह देखना कि यीशु ने अपने मिशन का ढांचा किस प्रकार से बनाया बहुत जानकारी देने वाला हो सकता है। प्रचारक, प्राचीन, शिक्षक और मिशनरी लोग अपनी सेवकाई में इस समय के साथ निपटने के उसके ढंग से सहायक प्रासंगिकताएं बना सकते हैं।

1. मरकुस ने यह स्पष्ट कर दिया कि गलील में से जाने के दौरान यीशु अपने काम के चलते रहने के लिए गम्भीर विचार कर रहा था। उसका काम चलता रहना था या उसके मरने के साथ खत्म हो जाना था?

उसने अपने अनन्त मिशन का आरम्भ पृथ्वी के अपने मिशन के द्वारा किया था। यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का काम तैयारी के लिए था और यीशु का काम भी तैयारी के लिए था। यूहन्ना ने यीशु के लिए मार्ग साफ़ करने के लिए रास्ते ''सीधे'' किए थे (देखें 1:3), और यीशु मसीही युग को लेकर आया।

यीशु ने अपनी सेवकाई को किस प्रकार से खत्म किया, उसके मिशन के छात्र को पृथ्वी पर उसके काम के अधूरा होने का पता चलता है; यीशु का ध्यान बड़ी बात की ओर था जिसे उसके चेलों ने करते रहना था। अपनी सेवकाई के दौरान उसने अपने वाले राज्य अर्थात कलीसिया अर्थात अपनी आत्मिक देह की आधारशिला रख दी थी।

यीशु के अपनी मण्डली को रखने में प्रेरितों को चुनना और उन्हें प्रशिक्षण देना शामिल था। अपनी मृत्यु और जी उठने पर उसने अपने मिशन के एक पहलू को उनकी ओर फेर देना था। पृथ्वी पर अपने जीवन के अंतिम भाग में आने पर उन्हें वे अगुवे बनाने का काम जो वह उन्हें बनाना चाहता था उसके लिए बहुत ही महत्वपूर्ण बन गया।

यीशु का नमूना हमें यह याद रखने की चुनौती देता है कि राज्य में हर चेले के काम का महत्व बना रहता है। परमेश्वर के सेवक केवल राज्य का काम नहीं कर रहे बल्कि वे अनन्तकालिक काम भी कर रहे हैं। मसीही लोगों के रूप में हमने अपने आपको उस आत्मिक उन्नति में डाला है जिसे हम उस आत्मिकता से तैयार करके अनन्तकालिक होने में लगा सकते हैं। यीशु के चेले इस पृथ्वी पर अपने सीमित समय के कारण हमें यीशु की तरह चलते रहने के लिए विचार करना आवश्यक है अपने मिशन के लिए किया।

2. मरकुस के अनुसार, यीशु ने उस समय को *प्राथमिकता* दी जो प्रेरितों को सिखाने के लिए आवश्यक होना था। इस प्राथमिकता के कारण, बिना किसी के पता चले वह गलील में से जाना चाहता था। मरकुस ने लिखा कि यीशु ''नहीं चाहता था कि कोई जाने'' (9:30)। यहां पर उसकी दिलचस्पी भीड़ में नहीं थी। वह नहीं चाहता था कि कोई भी, चाहे कोई व्यक्ति हो या भीड़, उसके पास आए। इसलिए उसके और प्रेरितों के गलील में से जाते हुए, वे चुपके से गए ताकि यीशु बिना किसी रुकावट के उनके साथ समय बिता सके। हो सकता है कि वह दो दो या चार चार की छोटी-छोटी टोलियों में गए हों। शायद यीशु ने प्रत्येक छोटे समूह के साथ

थोड़ी देर के लिए थोड़ा समय बिताया और फिर वे अतिरिक्त चर्चाओं के लिए इकट्ठा हुए। वह आत्मिक अगुवे तैयार कर रहा था और उसके लिए गम्भीर चर्चाओं और अकेले में समय बिताना आवश्यक था।

आत्मा के द्वारा, पौलुस ने मनुष्यों की खेती किए जाने के महत्व को समझ लिया, जब उसने तीमुथियुस से विनती की, ''जो बातें तू ने बहुत गवाहों के सामने मुझ से सुनी है, उन्हें विश्वासी मनुष्यों को सौंप दे; जो दूसरों को भी सिखाने के योग्य हों'' (2 तीमु. 2:2)। आत्मिक अगुवे पैदा नहीं होते बल्कि चर्चा के क्लासरूम में और सेवा के क्षेत्र में सही अगुआई देकर उन्हें बनाया जाता है। यीशु के प्रेरितों के लिए भी यही बात लागू होती थी और हमारे लिए भी।

3. यीशु प्रेरितों को जो बुनियादी संदेश देना चाहता था वह सिर पर मण्डराती उसकी मृत्यु का संदेश था। उसका मानना था कि उसके लिए उन्हें उन परेशानियों के लिए जो शीघ्र ही उन पर टूटने वाली थीं, विशेष *तैयारी* करवानी आवश्यक थी। उसने उन्हें बताया, ''मनुष्य का पुत्र, मनुष्यों के हाथ में पकड़वाया जाएगा, और वे उसे मार डालेंगे; और वह मरने के तीन दिन बाद जी उठेगा'' (9:31)।

यीशु को यरूशलेम के निकट जाने पर अपने मिशन में कठिनाइयों का सामना करना पड़ना था। उसकी गिरफ़्तारी, पेशियों, क्रूसारोहण पर प्रेरितों ने उसमें से लेना था जो उन्होंने उसके साथ हुई इन चर्चाओं में जमा कर रखा था।

अपने प्रेरितों को यीशु की शिक्षा में परमेश्वर की सनातन मंशा का अध्ययन करवाना शामिल था। यीशु उन्हें अपनी मृत्यु के बाद मज़बूत बने रहने के लिए ही तैयार नहीं कर रहा था बल्कि वह उन्हें उनके काम के लिए अगुआई भी दे रहा था जिससे सारा मसीही युग प्रभावित होना था। प्रतीकात्मक भाषा में उसने एक और जगह पर पतरस से यह बात कही: ''मैं तुम से सच कहता हूं कि नई सृष्टि में जब मनुष्य का पुत्र अपनी महिमा के सिंहासन पर बैठेगा, तो तुम भी जो मेरे पीछे हो लिये हो, बारह सिंहासनों पर बैठकर इस्राएल के बारह गोत्रों का न्याय करोगे'' (मत्ती 19:28)।

भविष्य के लिए हमारी जिम्मेदारियों में से एक आने वाले कठिन समयों के लिए तैयारी करना शामिल है। पौलुस उन कलीसियाओं में वापस गया, जिन्हें उसने पहली मिशनरी यात्रा के समय स्थापित किया था ''और चेलों के मन को स्थिर करते रहे और यह उपदेश थे कि विश्वास में बने रहो और यह कहते थे, 'हमें बड़े क्लेश उठाकर परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना होगा''' (प्रेरितों 14:22)। हम में से हर किसी को सताव के लिए, लोगों के पास जाने के लिए, नये बने चेलों को आगे बढ़ने में सहायता करने के लिए और अपने अंतिम सफ़र में जाने के लिए तैयार होना आवश्यक है। जैसे यीशु ने किया वैसे हमें भी करना आवश्यक है।

निष्कर्ष: यीशु के दु:ख सहने का विवरण हमें बताता है कि हम भविष्य को कैसे देखें। हमारे भविष्य के लिए वैसे ही प्रबन्ध किए जाने आवश्यक है, जैसे यीशु के भविष्य के लिए आवश्यक थे। उसके प्रेरितों को जो होने वाला था उसके लिए तैयार करने के लिए निरन्तरता, प्राथमिकता और तैयारी पर ध्यान देना आवश्यक था। हमें भविष्य के लिए तैयार होना और लम्बी उम्र के प्रति काम करना आवश्यक है।

यीशु की मृत्यु सुसमाचार के विवरणों का मुख्य भाग है। ये चारों पुस्तकें हमें वह सब बताती

हैं जो पता होना आवश्यक है कि यीशु ने हमारे लिए किया। जब हम भविष्य की ओर देखते हैं तो हमारे सामने केवल एक ही मार्ग रह जाता है और वह क्रूस का मार्ग है। अनन्त जीवन केवल उस मार्ग पर मिलता है। यीशु में विश्वास के साथ (यूहन्ना 8:24), सच्चे दिल से मन फिराव (लूका 13:3), यीशु के परमेश्वर होने का अंगीकार (मत्ती 10:32), और पापों की क्षमा के लिए उसमें बपतिस्मा (देखें मरकुस 16:16; यूहन्ना 3:5), लेकर हम क्रूस के उस मार्ग में आ सकते हैं जो हमें अपने स्वर्गीय घर की ओर ले जाता है।

असली महानता (9:33-37)

यीशु और उसके प्रेरित गलील में से होते हुए कफ़रनहूम में पहुंच गए थे (9:33)। स्पष्टतया यीशु घर से दूर अपने घर लौटने को तैयार था। यह घर पतरस का हो सकता है।

कफरनहूम की ओर जाते हुए प्रेरित यीशु से पीछे रह गए होंगे। शायद शिक्षा की उनकी चर्चाओं में कोई ठहराव आ गया था। प्रेरित आपस में बातें करने लगे थे कि आने वाले राज्य में सबसे बड़ा कौन होगा। राज्य के बारे में जिसे यीशु बनाने वाला था और उन्होंने इसमें क्या करना था अभी तक उनकी समझ में अभी कुछ नहीं आया था।

उस घर में पहुंचने पर जहां यीशु ने रुकना था, उन्हें एक बड़े समूह में इकट्ठा होने और अपने विचार साझा करने का अवसर मिल गया। स्पष्टतया चेलों ने यीशु से पूछा, ''स्वर्ग के राज्य में बड़ा कौन है?'' (मत्ती 18:1)। मरकुस ने इस घटना को इस प्रकार से लिखा है: ''और घर में आकर उसने उनसे पूछा, 'रास्ते में तुम किस बात पर विवाद कर रहे थे?''' (मरकुस 9:33ख)। प्रेरित यीशु के प्रश्न से परेशान हो गए और वे खामोश हो गए। उन्हें समझ में नहीं आ रहा था कि क्या जवाब दें क्योंकि उन्हें पता था कि यीशु इसके लिए उनकी प्रशंसा नहीं करेगा कि उन्होंने बड़ा होने के विषय को कैसे लिया था। मरकुस ने लिखा, ''वे चुप रहे, क्योंकि मार्ग में उन्होंने आपस में यह वाद-विवाद किया था कि हम में से बड़ा कौन है'' (9:34)। दूसरे शब्दों में स्पष्ट रूप में उनकी चर्चा स्वार्थ से भरी थी। वे आपस में बहस करते हुए और झगड़ रहे होंगे, इसी कारण नहीं चाहते थे कि यीशु को उनकी बातचीत का पता चले।

यह बताने के लिए कि वास्तव में बड़ा होने का क्या अर्थ है, यीशु ने प्रेरितों के साथ बात करने के लिए इस क्षण को चुना। उसने उन्हें अपने इर्द-गिर्द इकट्ठा होने को कहा और बड़ा होने के बारे में बताने लगा। उसने बड़ा होने की चर्चा का आरम्भ किया जिसे हर चेले को सुनना आवश्यक है।

1. *यीशु ने यह समझाते हुए आरम्भ किया कि बड़ा होने का क्या अर्थ है।* बाइबल बताती है, ''तब उसने बैठकर बारहों को बुलाया और उनसे कहा, 'यदि कोई बड़ा होना चाहे, तो सबसे छोटा और सब का सेवक बने''' (9:35)। बेशक यीशु को मालूम था कि वे क्या बातें कर रहे हैं और उसे मालूम था कि उनकी बात किस विषय पर थी। उसने उन्हें डांटा नहीं परन्तु बड़ा होने की वास्तविक समझ के प्रति उन्हें अगुआई दी।

उसने वहां से आरम्भ किया जहां से उन्होंने रास्ते में अपनी बहस आरम्भ की थी। यह तो ऐसा था जैसे वह कह रहा हो, ''तो तुम जाना चाहते हो कि मेरे राज्य में सबसे बड़ा कौन होगा? मैं बताता हूं। मेरे राज्य में सबसे बड़ा वह होगा, जो सचमुच में सेवक है, और जानबूझकर अपने

आपको पीछे रखता है।''

यीशु की इस टिप्पणी को समझना हमारे लिए कठिन है। वह बड़ा होने का ऐसा विचार दे रहा था जो उस विचार से जो पहले प्रेरितों ने सुना था, अलग था। वह उन्हें बता रहा था, ''अपने राज्य में मैं केवल उसी को आगे रखूंगा जो निरंतर रूप में अपने आपको पीछे रखता है। यह वह व्यक्ति होगा जिसने सबका सेवक होना चुना है।''

संसार बड़े होने को वैसे नहीं देखता जैसे यीशु देखता है। एक अर्थ में, यीशु ने कहा, ''मेरा राज्य अलग होगा। इसके लोग स्वार्थी मानक से नहीं बल्कि स्वार्थ रहित मानक से चलेंगे।'' परमेश्वर की प्रेरणा से पौलुस ने इस संदेश को समझा। फिलिप्पियों 2:3, 4 में उसने लिखा: ''विरोध या झूठी बड़ाई के लिए कुछ न करो पर दीनता से एक-दूसरे को अपने से अच्छा समझो। हर एक अपनी ही हित की नहीं, बरन दूसरों की हित की भी चिन्ता करे।'' इसके बाद पौलुस ने अपनी टिप्पणी को यीशु द्वारा दिए गए बलिदान की चर्चा में बदल दिया। हमारा उद्धारकर्त्ता जो बातें सिखाता था उनका वह सिद्ध उदाहरण भी था। पौलुस की परिभाषा को बेहतर ढंग से समझने के लिए हमें केवल क्रूस की ओर देखने की आवश्यकता है जहां यीशु ने खुद को ''न'' और दूसरों के इस संसार को ''हां'' कहा। पौलुस ने कहा, ''जैसा मसीह यीशु का स्वभाव था वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो'' (फिलि. 2:5)। सेवक के लिए बातों और व्यवहार से अपने प्रभु का अनुसरण करना आवश्यक है।

2. *फिर यीशु ने प्रेरितों के सामने एक उदाहरण रखा।* यह वचन यह दिखाते हुए आगे बढ़ता: ''और उसने एक बालक को लेकर उनके बीच में खड़ा किया, और उसे गोद में लेकर उनसे कहा, 'जो कोई मेरे नाम से ऐसे बालकों में से किसी एक को भी ग्रहण करता है, वह मुझे ग्रहण करता है; और जो कोई मुझे ग्रहण करता, वह मुझे नहीं, वरन् मेरे भेजनेवाले को ग्रहण करता है''' (मरकुस 9:36, 37)।

उनके सामने बैठकर, इस बच्चे को अपनी गोद में लेते हुए, यीशु उनसे कह रहा था, ''बड़े पद की इच्छा मत रखो। बड़े रुतबे का इरादा न रखो। दूसरों पर अधिकार चलाने की आरजू न रखो। नहीं, प्रभाव की इनमें से किसी भी स्थिति की इच्छा न करो। इसके बजाय जाकर किसी कमज़ोर, किसी छोटे और किसी लाचार को ढूंढो और उसकी सेवा करो। जाकर इस प्रकार की सेवा करो क्योंकि तुम मेरे चेले हो। यह करो क्योंकि तुम्हें सचमुच में समझ आ गया है कि मेरे पीछे चलने का क्या अर्थ है।''

जब उसका कोई चेला, दयालु, उदार, समझने और सहायता करने वाला बनकर, इस प्रकार से रहता है और उसकी शारीरिक आवश्यकताएं तो पूरी होंगी ही आत्मिक रूप में भी उसे ऊंचा किया जाएगा। इसके अलावा वह आशीषित भी होगा। वह अपने आपको और अधिक मसीह के जैसा, और अधिक परमेश्वर के बालक के जैसा देखेगा। इसके अलावा ऐसे आज्ञापालन से मसीह को महिमा मिलती है। ऐसे कामों से पिता को महिमा मिलती है जिसने यीशु को संसार में भेजा।

यीशु जब बड़े होने की बात कर रहा था तो उसके मन में किसी सम्राट या शूरवीर सिपाही की बात नहीं थी। उसके ध्यान में एक बालक था। एक अर्थ में उसने कहा, ''बालक की सेवा करो और तुम्हें बड़े होने का वास्तविक अर्थ पता चल जाएगा।''

3. प्रेरितों के और हमारे लाभ के *यीशु ने एक प्रासंगिकता भी बनाई*। उसने कहा, ''जो

कोई मेरे नाम से ऐसे बालकों में से किसी एक को भी ग्रहण करता है, वह मुझे ग्रहण करता है; और जो कोई मुझे ग्रहण करता, वह मुझे नहीं, वरन् मेरे भेजनेवाले को ग्रहण करता है'' (9:37)। यीशु द्वारा बनाई प्रासंगिकता यह है कि हमें ऐसे बालक को उसके नाम में ग्रहण करना चाहिए। किसी बालक को ''ग्रहण'' करने का क्या अर्थ है? ''ग्रहण करना'' का अर्थ बालक को बालक के रूप में लेना, स्वागत करना या सेवा करना। बालक हमें लौटा नहीं सकता वह हमें किसी प्रकार का कोई आदर, पद या शक्ति नहीं दे सकता। हम उससे बढ़कर ताकतवर, उससे अधिक सुरक्षित और उससे अधिक पढ़े लिखे हैं। वह हमें केवल किसी दूसरे मावनीय जीव की सेवा करने का अवसर दे सकता है।

निष्कर्ष: यीशु के अनुसार हर वास्तविक चेले में खुद को महत्व देने के अर्थ में अंतिम और सेवा के अर्थ में पहला होकर बड़ा व्यक्ति बनना चाहिए (और वह बन सकता है)। इस नियम का उसका उदाहरण एक दीन और विनम्र बच्चा था। दीनता अपने आपको नापसंद करना नहीं है। यह निस्वार्थपन और खुद को भूल जाना है। जब किसी में ये गुण आ जाते हैं तो वह व्यक्ति मसीह के चेले के रूप में दूसरों की सेवा अपने आप करेगा।

यीशु ने हमारे लिए एक स्पष्ट प्रासंगिकता बनाई: कि हम आत्मा में, अधिकार में पद में, व्यवसाय में प्रभाव में दीन हों। सचमुच में बड़ा होना स्वार्थी होना नहीं बल्कि आत्मत्याग करने वाला होना है। सेवक होने की यह भावना यीशु के सेवक होने की नकल करने से बनती है।

यीशु हमें बड़ा बनने के लिए बुलाता है, परन्तु जिस पकार का बड़ा होने के लिए वह बुलाता है, वह छोटा होने और आत्मत्याग से होता है। जो भी कोई इस प्रकार से बड़ा होना चाहता हो वह यीशु के पास आकर इसे पा सकता है, क्योंकि यह केवल ऐसे ही बड़ा बनाता है।

''इस आदमी का क्या?'' (9:38-41)

कफ़रनहूम में, यूहन्ना ने यीशु से किसी के बारे में पूछा, जिसे उसने देखा था। उसने किसी आदमी को देखा था जिसे वह जानता था, पर यीशु के नाम में दुष्टात्माओं को निकाल रहा था (9:38)। यह व्यक्ति प्रेरितों में से नहीं था। स्पष्टतया यूहन्ना ने किसी कारण यह निष्कर्ष निकाल लिया था कि दुष्टात्माओं को निकलाने की यीशु की चमत्कारी शक्ति का इस्तेमाल केवल यीशु और प्रेरित ही करें। यूहन्ना ने सोचा होगा कि किसी भी व्यक्ति जिसे वह नहीं जानता यीशु के नाम में चमत्कार नहीं करने चाहिए और यदि वह ऐसा करता है तो प्रेरितों के जैसा होने का झूठा दावा कर रहा है।

सुसमाचार के चारों विवरणों में से मरकुस (9:38-41) और लूका (9:49, 50) इस घटना का उल्लेख करते हैं। हम यह मान सकते हैं कि यह व्यक्ति यीशु से मिला होगा, उसने विश्वास रखा था, उसने इसे सामर्थ दी थी और उसने इसे भेजा था। प्रेरितों को यह पता नहीं था कि यीशु ने यह किया है। स्पष्टतया यह व्यक्ति प्रेरितों में से नहीं था। प्रेरित केवल बारह थे और इन बारहों को एक विशेष उद्देश्य के लिए बुलाया गया था। परन्तु बहुत से और विश्वासी चेले गलील से यहूदिया तक फैले हुए थे। यीशु ने अपने प्रेरितों का चयन उन बहुत से चेलों में से किया था जो उसके पीछे चलते थे। जो उत्तर यीशु ने दिया उससे यूहन्ना को सारी बात समझ में आ गई और उसकी आंखें खुल गईं:

> उस को मत मना करो; क्योंकि ऐसा कोई नहीं जो मेरे नाम से सामर्थ्य का काम करे, और जल्दी से मुझे बुरा कह सके, क्योंकि जो हमारे विरोध में नहीं, वह हमारी ओर है। जो कोई एक कटोरा पानी तुम्हें इसलिये पिलाए कि तुम मसीह के हो तो मैं तुम से सच कहता हूँ कि वह अपना प्रतिफल किसी रीति से न खोएगा (मरकुस 9:39-41)।

यह बता पाना कठिन है कि यह यीशु और यूहन्ना की यह संक्षिप्त बातचीत कहां पर खत्म हुई। अधिकतर अनुवादों में यह आयत 41 के साथ खत्म होती है।

आइए यूहन्ना को यीशु के जवाब के प्रत्येक भाग को ध्यान से देखते हुए, इस पर विचार करें। इससे हमें जितनी भी अगुआई मिल सके वह ले लेनी चाहिए।

1. यीशु ने यूहन्ना को और दूसरे प्रेरितों को *इस आदमी को स्वीकार लेने को* कहा (9:39)। यदि वह यीशु के काम का विरोधी होता तो उसे रोकना, डांटना, और अस्वीकार कर देना समझदारी होनी थी। पर यह आदमी यीशु के नाम में दुष्टात्माओं को निकाल रहा था। वह अच्छे काम कर रहा था और वह इसे सही मंशा से और सही अधिकार से कर रहा था। जो कुछ वह कर रहा था उसमें वह सफल रहा होगा क्योंकि यीशु ने उसके कामों को मान्यता दी।

जो कारण यीशु ने बताया वह इस बात को मान लेना था कि कोई भी व्यक्ति जो उसके नाम में सचमुच में आश्चर्यकर्म कर रहा हो, वह भरोसे के योग्य है और उसे स्वीकार कर लेना चाहिए। यीशु ने कहा कि आदमी ने उसे ''जल्दी से बुरा'' नहीं कर सकता था (9:39) और संकेत दिया कि प्रेरितों को चाहिए कि उसके काम को प्रामाणिक मान लें।

2. यीशु ने यूहन्ना तथा दूसरे प्रेरितों को *इस आदमी को चेला होने को मान लेने को* कहा। उसने कहा, ''क्योंकि जो हमारे विरोध में न ही वह हमारी ओर है'' (9:40)। यीशु के अनुसार यह आदमी उसकी ''ओर'' था। उसकी बात से केवल दो श्रेणियों का पता चता है: यीशु ''की ओर'' या उस ''के विरोध में।'' यह आदमी पहले वाले समूह में आता था और यीशु ने प्रेरितों को उसे अपने में से एक के रूप में स्वीकार करने को कहा। जो उसके विरोध में थे, यीशु ने उन्हें उनकी अपनी पसंद पर और उनके अपने नसीब पर छोड़ दिया।

3. यीशु ने अपने करीबी चेलों को *इस आदमी को सराहने* को कहा (9:41)। उसने अपने साथ और साथी मसीहियों के साथ हमारे सम्बन्ध के लिए हमें ठीक अगुआई दी। हम इसे इस प्रकार से कह सकते हैं: यदि कोई व्यक्ति यीशु के नाम में, या इसलिए कि हम उसके चेले हैं हमारे लिए छोटा सा काम करता है तो उसे उसकी आशीष मिलेगी। इसका अर्थ यह हुआ कि यदि कोई बड़ा काम करने की कोशिश कर रहा है तो उसे बड़ी आशीष मिलेगी। कुछ लोग बड़ा काम कर सकते हैं जबकि दूसरे लोग केवल छोटी-छोटी बातें कर सकते हैं, जैसे किसी चेले को पानी का गिलास देना। फिर भी यीशु के सेवक चाहे बहुत से हैं, परन्तु मिलकर वह एक देह बन जाते हैं। उस देह के अंग के रूप में काम करने वाले किसी भी व्यक्ति को वह जीवन, ऊर्जा और महिमा मिलेगी जो देह को मिलती है। इसलिए यीशु ने प्रेरितों को इस आदमी के काम के लिए उसकी सराहना करने कहा।

निष्कर्ष: यूहन्ना को मिले यीशु के जवाब का बुनियादी अर्थ यह है कि ''जो भी कोई सचमुच में मेरे नाम से आता है उसे ग्रहण कर लें।'' परमेश्वर का ईश्वरीय पुत्र यीशु किसी भी

व्यक्ति के साथ, जो उसके पीछे चलना और उसके काम को करना चाहता हो कहीं पर भी काम करेगा। वह हमें स्वीकार करेगा चाहे हम कहीं भी क्यों न रहते हों, हम कैसे भी क्यों न दिखते हों या हम कितने भी गुणी क्यों न हों। एकमात्र शर्त उसकी इच्छा को मान लेना है; क्योंकि बिना इसके यीशु के साथ किसी का कोई सम्बन्ध नहीं हो सकता।

परेशान करते रहने वाली त्रासदियां (9:42-50)

9:42-50 इस अनोखे वचन में यीशु की एक से एक बातें हैं। उनका कोई विशेष संदर्भ प्रतीत नहीं होता। मरकुस ने उन्हें बाइबल में यहां पर रखने का साहित्यिक निर्णय लिया। ये बातें चेला बनने से सम्बन्धित आदेशों के रूप में एक-दूसरे से थोड़ा बहुत जुड़े हैं।

हम उन्हें ''परेशान करते रहने वाली त्रासदियां'' के शीर्षक के अधीन देखेंगे। अपने आप में ये कुछ गम्भीर मसलों की बात करते हैं। यह सूची चाहे लम्बी है, परन्तु हमें अपने कामों, अपने जीवन और अपने भविष्य के बारे में समझदारी से सोचने के लिए कहती है।

त्रासदी एकः यीशु चाहता है कि हम दूसरों को विनाश में ले जाने की त्रासदी पर विचार करें। उसके शब्द हमें कम्पकपी लगा देते हैं। उसने कहा, ''जो कोई इन छोटों में से जो मुझ पर विश्वास करते हैं, किसी को ठोकर खिलाए तो उसके लिए भला यह है कि एक बड़ी चक्की का पाट उसके गले में लटकाया जाए और वह समुद्र में डाल दिया जाए'' (9:42)।

''ठोकर'' के लिए इस्तेमाल हुआ यूनानी शब्द (σκανδαλίζω, *skandalizō*) है जिससे अंग्रेज़ी भाषा का शब्द ''scandalize'' (नाराज़ करना) मिला है। अंग्रेज़ी भाषा में यह लगभग यूनानी का लिप्यंतरण ही है। ''Scandalon'' (स्कैंडालोन) शब्द फंदे के लिए इस्तेमाल होने वाली छड़ी है; इसको खींचने पर फंदा अचानक से बंद हो जाता और इससे जानवर काबू में आ जाता। यहां पर यीशु की चेतावनी के लिए अंग्रेज़ी भाषा में ''stumble'' शब्द है। वह किसी की ओर इशारा कर रहा था जिससे किसी छोटे बालक (या नये विश्वासी) ने फंदे में फंस जाना था जो उसके विनाश का कारण बनना था। दूसरे शब्दों में इस व्यक्ति ने किसी छोटे के नाश होने के लिए ज़िम्मेदार होना था।

ऐसे व्यक्ति को दिए जाने वाले दण्ड के बारे में यीशु स्पष्ट और कड़ा था। उसने कहा कि ''छोटे'' के नाश होने का कारण बनने वाला व्यक्ति कड़े दण्ड के योग्य है। उसने यूनानियों, रोमियों और मिस्रियों के द्वारा मत्यु देने के वास्तविक ढंग को न्याय के प्रतीक के रूप में इस्तेमाल किया। इस दण्ड में व्यक्ति के गले में अनाज पीसने वाली चक्की के बड़े पाट को जिसे गदहे के द्वारा खींचा जाता था, लटकाना होता था। फिर उस व्यक्ति को समुद्र में गहरी जगह में फेंक दिया जाता यीशु यह घोषणा कर रहा था कि किसी छोटे के नाश होने का कारण बनने वाले कुछ काम कड़े से कड़े दण्ड के योग्य होंगे।

किसी को पानी का कटोरा देने के छोटे से काम से किसी चेले की सहायता करने का भी प्रतिफल दिया जाएगा (9:41)। इसके उलट एक बुरे काम से उस कड़े से कड़े अनन्त दण्ड के योग्य है जिसकी कल्पना की जा सकती है।

यीशु के ये शब्द हमें अच्छे उदाहरण बनने की चुनौती देने के लिए कहे गए थे। उसके लिए हमारा समर्पण इतना मज़बूत होना चाहिए कि हम किसी का भी उससे दूर ले जाने का

साहस न करें।

त्रासदी दो: दोहरी समस्या बेकार गई योग्यताओं का कारण असंयम के त्रासदी की है। यीशु ने कहा कि यदि बुरी आदतें और बुरे व्यवहार व्यक्ति को बुराई में फंसा रहे हों तो उसे आत्मिक अप्रेशन किए जाने के लिए अपने आपको दे देना चाहिए। 9:43-47 में उसने हाथ, पांव या आंख के किसी को ठोकर खिलाने पर निकाल देने की बात की।

यहां पर दोहरी त्रासदी यह है कि बुरे उद्देश्य के लिए देह के अंग का इस्तेमाल भी, इसे भलाई के लिए इस्तेमाल करने में नाकाम होना है। हाथ, पांव, या आंख को बुराई के लिए इस्तेमाल करते रह कर, इसे अनन्त मृत्यु का दण्ड दिलाने से अच्छा है कि इसे काट दिया जाए। किसी की क्षमता का यह कितना का बड़ा नुकसान है।

बुराई को हमारे जीवनों में से निकाल दिया जाना आवश्यक है। पूरे शरीर की भलाई के लिए बुराई में लगे अंगों को बलिदान कर दिया जाना आवश्यक है। यह ज़ोर देते हुए कि की जाने वाली कार्यवाही निर्णायक, पूरी और उसी समय हो, यीशु ने यहां पर अनिर्दिष्ट भूतकाल का इस्तेमाल किया।

इन्हीं शब्दों के साथ यीशु हमसे अपनी चौकसी करने को कह रहा था। क्या हमें उसकी पवित्र इच्छा के बजाय किसी और व्यक्ति या वस्तु चला रही है? यदि हमारा उत्तर ''हां'' है तो हमें तुरन्त कार्यवाही करना आवश्यक है।

त्रासदी तीन: यीशु ने अनन्त विनाश की त्रासदी पर ज़ोर देने के लिए एक और स्पष्ट चित्रण का इस्तेमाल किया। उसने एक ऐसी जगह की बात की ''जहाँ उनका कीड़ा नहीं मरता और आग नहीं बुझती'' (मरकुस 9:44, 46, 48)। वह यशायाह 66:24 का एक वाक्यांश इस्तेमाल कर रहा था। एक बार फिर से यीशु ने अनन्त विनाश और सदा तक रहने वाली बर्बादी के प्रतीकात्मक अर्थ की भाषा का इस्तेमाल किया।

हमारे कामों और व्यवहारों से हमारे भविष्य तय होंगे। हर प्राण अनन्तकाल में जाने वाला है, और जो व्यक्ति कभी मन नहीं फिराता है, भयंकर भविष्य उसकी राह देख रहा है। वास्तव में इस संसार में भक्तिपूर्ण जीवन जीना ही काम आएगा। यदि अनन्त जीवन पाने के लिए बड़े से बड़े बलिदान किया जाते हैं, तो अंत में ये बलिदान बड़े छोटे लगेंगे।

> ''क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाना चाहे वह उसे खोएगा, पर जो कोई मेरे और सुसमाचार के लिये अपना प्राण खोएगा, वह उसे बचाएगा। यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे और अपने प्राण की हानि उठाए, तो उसे क्या लाभ होगा? मनुष्य अपने प्राण के बदले क्या देगा?'' (मरकुस 8:35-37)।

त्रासदी चार: अंतिम त्रासदी फूट की त्रासदी है। यीशु ने इस त्रासदी के बारे में अधिक नहीं कहा, परन्तु जो कुछ उसने कहा वह निरुत्तर करने वाला है। चेला होने की इस चर्चा के अंत में उसने कहा, ''... और आपस में मेल मिलाप से रहो'' (9:50)। यीशु ने यह उपदेश इसलिए दिया होगा क्योंकि एकता का सम्बन्ध सीधे तौर पर अनन्त जीवन से है। पतरस ने इस विषय को यीशु की वापसी से अपने विवरण का महत्वपूर्ण भाग बना दिया। समय के अंत का विवरण देते हुए, उसने कहा, ''... तुम्हें पवित्र चाल चलन और भक्ति में कैसे मनुष्य होना चाहिए?''

(2 पतरस 3:11, 12; KJV)। इस प्रश्न का कुछ उत्तर 2 पतरस 3:14 में दिया गया है: ''इसलिए, हे प्रियो, जब कि तुम इन बातों की आस देखते हो तो यत्न करो कि तुम *शान्ति* से उसके सामने निष्कलंक और निर्दोष ठहरो।'' पतरस के अनुसार, यीशु की वापसी के लिए तैयार होने का एक तरीका अपने आप से पूछना है, ''क्या हम निष्कलंक, निर्दोष हैं और अपने भाइयों के साथ सुलह से रह रहे हैं?''

निष्कर्ष: इस वचन का अंतिम भाग सम्भवतया बाइबल के उन सबसे कठिन वचनों में से एक है जिसकी व्याख्या करना कठिन है। यीशु ने कहा, ''क्योंकि हर एक जन आग से नमकीन किया जाएगा। नमक अच्छा है, पर यदि नमक का स्वाद जाता रहे, तो उसे किस से नमकीन करोगे? अपने में नमक रखो, और आपस में मेल मिलाप से रहो'' (मरकुस 9:49, 50)। हमारे प्रभु ने जिस अर्थ में ''नमक'' शब्द का इस्तेमाल किया उसे समझना कठिन है। मैक्गर्वे सहित कुछ बहुत अच्छे विद्वानों ने इस शब्द को अनन्त आग के उदाहरण के रूप में देखा।[51] यदि यह विचार सही है तो इस पद्य में इस बात पर ज़ोर दिया गया है कि अनन्तकाल में नाश होने का विचार हम में से हर किसी के लिए प्रेरणा देने वाला है। इस अर्थ में हमें ''आग से नमकीन'' किया जाता है। वह कह रहा था कि ''नमक जैसी इस प्रेरणा को बनाए रखो; यह तुम्हारे लिए ठीक होगी, विशेषकर यदि तुम्हें अपने जीवन में से किसी पाप को निकालना हो। यदि तुम अपने मन में से उस नमक को निकाल देते हो तो पाप पर जय पाने के लिए आवश्यक प्रेरणा तुम में नहीं है। यह तुम्हें सचमुच का चेला बनने के लिए भी प्रेरणा देगा।'' यीशु यह नहीं कह रहा था कि चेला बनने के लिए मुख्य प्रेरणा भय में रहना है। नहीं, मुख्य प्रेरणा प्रेम है, परन्तु भय से सहायता मिलती है। यीशु ने कहा, ''क्योंकि हर एक जन आग से नमकीन किया जाएगा'' (9:49)। हर चेले को यह प्रेरणा उसके अंदर से मिलती है चाहे उसे पूरी तरह से उसका पता हो या न। आइए हम अपने आपसे पूछे, ''दूसरों के साथ मिल-जुलकर रहने के लिए मैं अपना नमूना, अपना अनुशासन, अपना अनन्त लक्ष्य और अपने प्रयासों का क्या कर रहा हूं?''

इसका अर्थ यह हुआ कि इस अध्ययन का बड़ा प्रश्न यह है कि समझदार चेले का जीवन कैसा होना चाहिए? यह वचन जो हमारे प्रभु के मुख से निकला, हमें चार प्रकार से समझदार बनना सिखाता है। वह हमें रुकावट डालने वाले नहीं बल्कि सहायता करने वाले; इस संसार की बातों के सम्बन्ध में सही अनुशासन करने; अपनी आंखें, अपने अनन्त लक्ष्य की ओर लगाए रखें और शांति में रहने को कहता है।

टिप्पणियां

[1]समानांतर विवरण मत्ती 16:28 और लूका 9:27 में हैं। [2]विलियम बार्कले, द *गॉस्पल ऑफ़ मरकुस,* दूसरा संस्करण, द डेली स्टडी बाइबल (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रेस, 1956), 213-14. [3]उन्हें आम तौर पर नबियों में दिखाया जाता है, जैसे आमोस 4:12, 13. उस वचन में परमेश्वर ने कहा कि उसने अपने लोगों को दण्ड देना था। उन्हें उससे ''मिलने को तैयार'' रहना था। [4]डेविड रोपर, द *लाइफ़ ऑफ़ क्राइस्ट, 1: सपलिमेंट,* ट्रुथ फ़ॉर टुडे कॉमेंट्री सीरीज़ (सरसी, आरकैंसा: रिसोर्स पब्लिकेशंस, 2003), 533. [5]यह शब्द ''सामर्थ'' नये नियम का आम शब्द है, जो लगभग 120 बार आता है। [6]''अनन्तकालिक राज्य'' (स्वर्ग) की बात आगे की गई है, जैसे प्रेरितों 14:22 और 2 तीमुथियुस 4:1. [7]समानांतर विवरण मत्ती 17:1-9 और लूका 9:28-36 में हैं। [8]देखें व्यवस्थाविवरण

34:1-5; 2 राजाओं 2:11. [9]देखें मत्ती 17:10-13; मरकुस 1:2-4; लूका 3:1-6; यूहन्ना 1:19-23. [10]पवित्र शास्त्र में, पिता के पास स्वर्गलोक को छोड़कर चला गया केवल यीशु के लिए ही कहा गया है।

[11]यूहन्ना 1:14 कहता है कि ''वचन देहधारी हुआ और हमारे बीच में डेरा किया।'' ''डेरा किया'' शब्द σκηνόω (*skēnoō*) है जो तम्बू में रहने का सुझाव देता है। σκηνόω, स्केनू की जोसेफ हेनरी थेयर की पहली परिभाषा है, ''तम्बू गाड़ना, तम्बू लगाना, तम्बू में रहना'' (जोसेफ हेनरी थेयर, *ए ग्रीक-इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामैंट* [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1962], 578)। [12]इस बादल का विवरण निर्गमन 13:21; 14:19; 40:35; गिनती 9:15-23 में है। इब्रानी शब्द (שְׁכִינָה, *Sh*e*kinah*) एक विवरणात्मक शब्द है जो इस बादल को दिया गया है। पवित्र शास्त्र में यह शब्द नहीं मिलता। [13]एल. ए. स्टॉफ़र, *मरकुस,* टुथ कॉमेंट्रीज़, गार्डियन ऑफ़ ट्रुथ फ़ाउंडेशन (बॉलिंग ग्रीन, कैंटकी: स्टैंडर्ड पब्लिशिंग कं., 1999), 198. [14]समानांतर विवरण मत्ती 17:10-13 में है। [15]कोय डी. रोपर, *द माइनर प्रोफेट्स, 3: ज़करयाह ऐंड मलाकी; इंटरटेस्टामेंटल पीरियड,* टुथ फ़ॉर टुडे कॉमेंट्री सीरीज़ (सरसी, आरकैंसा: रिसोर्स पब्लिकेशंस, 2013), 307-9, 312. [16]मत्ती 11:7-19 और लूका 7:24-34 में भीड़ को यीशु की टिप्पणियां देखें। [17]पुराने नियम के बहुत से वचन इस विचार के साथ मेल खाते हैं: भजन 22:1, 14-18; 69:9, 11, 12; 118:22; यशायाह 53. (देखें मत्ती 21:42; यूहन्ना 2:17; प्रेरितों 8:32, 33.) [18]कइयों का मानना है कि ''एलिय्याह'' का एक और आना मसीह की वापसी के समय के निकट होगा। वे यह तर्क देते हैं कि यीशु अपना राज्य स्थापित नहीं कर पाया क्योंकि यहूदियों ने उसे मसीहा स्वीकार करने से इनकार कर दिया। ऐसा विचार पवित्र शास्त्र के साथ टिक नहीं सकता क्योंकि राज्य स्पष्ट रूप में पहले ही आ चुका है। [19]समानांतर विवरण मरकुस के विवरण से काफ़ी छोटे हैं (देखें मत्ती 17:14-21; लूका 9:37-43), चाहे उनमें वह विवरण है जो मरकुस में नहीं दिया गया। मत्ती ध्यान दिलाता है कि लड़के के पिता ने मसीह के सामने घुटने टेके। लूका कहता है कि यह घटना रूपांतर के बाद ''अगले दिन'' घटी, जो कि अवश्य ही रात को हुआ होगा। [20]दुष्टात्माओं पर यीशु की सामर्थ के एक उदाहरण के लिए, देखें मरकुस 5:1-20 (मत्ती 8:28-34; लूका 8:26-39)।

[21]मत्ती 17:19, 20 बताता है कि यीशु ने अपने प्रेरितों को बताया कि वे दुष्टात्मा को ''अपने विश्वास की घटी के कारण'' नहीं निकल पाए थे। [22]आर. सी. फोस्टर, *स्टडीज़ इन द लाइफ़ ऑफ़ क्राइस्ट* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1971), 745. [23]ए. ई जे. रॉलिन्सन, *सेंट मरकुस,* 2रा संस्क. (लंदन: मेथुएन ऐंड कं., 1927), 124. [24]फोस्टर, 746. [25]आलोचकों का खण्डन करते हुए, फोस्टर ने ज़ोर दिया कि यीशु ने ''मनुष्य का पुत्र'' उपाधि का इस्तेमाल ''मसायाह'' के बराबर के रूप में किया। (वहीं, 431-34.) लूका 21:36 इस विश्वास को मानता है। [26]समानांतर विवरण मत्ती 17:22, 23 और लूका 9:43-45 में हैं। [27]मत्ती 24:1, 2; मरकुस 13:1, 2; और लूका 21:5, 6 में यीशु ने अपने चेलों को बताया कि मन्दिर को नष्ट किया जाना था। यह आरोप कि यीशु ने कहा कि उसने मन्दिर को नष्ट कर देना था, मत्ती 26:61 और मरकुस 14:58 में मिलते हैं (देखें मत्ती 27:40; मरकुस 15:29)। [28] समानांतर विवरण मत्ती 18:1-5 और लूका 9:46-48 में हैं। [29]डोनल्ड इंग्लिश, *द मैसेज ऑफ़ मरकुस: द मिस्टरी ऑफ़ फेथ,* द बाइबल स्पीक्स टुडे (डाउनर्स ग्रो व, इलिनोय: इंटर-वर्सिटी प्रेस, 1992), 169. [30]कुछ उदाहरण ये हैं: सन्हेरीब (2 इतिहास 32:14, 21), नबूकदनेस्सर (दानिय्येल 4:30-33), और हेरोदेस अग्रिप्पा प्रथम (प्रेरितों 12:21-23)। इनमें से प्रत्येक ने अपने आपको दूसरों से ऊंचा किया, परन्तु परमेश्वर ने उन्हें नीचा कर दिया।

[31]लूका 18:14 में ''धर्मी ठहराया'' शब्द (δικαιόω, *dikaioō*) शब्द का अनुवाद ''सच्चा'' हो सकता है। [32]इंग्लिश, 169. [33]अगस्टिन (354-430 ई.) मसीहियत में मैनिकीवाद (आत्मिक प्रकाश की दोहरी फारसी फिलासफी बनाम भौतिक अंधकार) से आया था। वह उत्तरी अफ्रीका में हिप्पो का बिशप था। *कंनफैशन्स* (अंगीकार) नामक उसकी पुस्तक जिसमें उसने संसार के सामने अपने दुष्ट पापों को माना, आरम्भिक मध्य युगों की सबसे प्रसिद्ध पुस्तकों में से एक बन गई। उसका विश्वास ''मूल पाप'' की शिक्षा में था, यह तर्क देते हुए कि जन्म के समय हर व्यक्ति में आदम का पाप होता है। [34]एक समानांतर विवरण लूका 9:49, 50 में है। [35]जे. डब्ल्यू. मैक्गर्वे ऐंड फिलिप वाई. पेंडल्टन, *द फ़ोरफ़ोल्ड गॉस्पल ऑर ए हार्मनी ऑफ़ द फ़ोर गॉस्पल्स* (सिनसिनाटी: स्टैंडर्ड पब्लिशिंग कं., 1914), 301. [36]एक समानांतर विवरण मत्ती 18:6-9 में है। [37]निर्दोष निकलने पर इस दण्ड को पाने वाले व्यक्ति के पानी पर तैरकर बच जाने की बात मानी जाती थी। [38]ऐलन ब्लैक, *मरकुस,* द कॉलेज प्रेस NIV कॉमेंट्री (जोपलिन, मिसोरी: कॉलेज प्रेस पब्लिशिंग कं., 1995), 173. [39]''नरक'' के लिए यह शब्द जोसेफ़स

की पुस्तक *डिस्कोर्स टू द ग्रीक्स कंसर्निंग हेडिस* में हर जगह मिलता है (चाहे अब विद्वानों का मानना है कि यह कथन जोसेफ़स का नहीं बल्कि रोम के हिपोलिटुस का है)। [40]बार्कले, 239. (मिशना *एबथ* 1.5 कहता है, ''वह जो ... अपने ऊपर बुराई लाता और व्यवस्था के अध्ययन को नकारता है ... अंत में गेहन्ना का वारिस होगा।'')

[41]बार्कले, 240. [42]कोष्टक में दिए गए भाग सम्भवतया किसी आरम्भिक शास्त्री ने डाल दिए जिसे लगा कि 9:48 वाली प्रामाणिक बात को उनके लिए और ज़ोरदार बनाने के लिए, पिछले मेल खाते कथनों के साथ रखने के योग्य हैं। [43]इंग्लिश, 171. [44]ब्रूस एम. मेज़गर, *ए टैक्सचुअल कॉमैंट्री ऑन द ग्रीक न्यू टैस्टामैंट*, 3रा संस्क. (न्यू यॉर्क: यूनाइटड बाइबल सोसायटीज़, 1975), 102–3. [45]जे. डब्ल्यू. मैक्गार्वे, *द न्यू टैस्टामैंट कॉमैंट्री*, अंक 1, मत्ती ऐंड मरकुस (डेस मोइनेस: यूजीन एस. स्मिथ, 1875), 322–23. [46]आर. सी. एच. लेंस्की का यही विचार था। (आर. सी. एच. लेंस्की, *द इंटरप्रिटेशन ऑफ़ सेंट मरकुस'स गॉस्पल* [मिनियापोलिस: ऑग्सबर्ग पब्लिशिंग हाउस, 1946], 410–11.) [47]जेम्स बर्टन कॉफ़मैन, *कॉमैंट्री ऑन मरकुस* (ऑस्टिन, टैक्सस: फ़र्म फ़ाउंडेशन पब्लिशिंग हाउस, 1975), 197. [48]लैरी डब्ल्यू. हर्टाडो, *मरकुस* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक्स, 1989), 175. [49]पवित्र शास्त्र में नमक के इतने अलग-अलग उपयोग हैं कि कुछ संदर्भों की परिभाषा करना कठिन है। यहां ऐसा ही है। बेशक पहली सदी में रहने वाला व्यक्ति इन सामान्य उपयोगों से परिचित होगा और उसके लिए इन अंतरों को समझना आसान होगा। [50]देखें रोमियों 8:15, 16; 16:16; इफिसियों 1:5; 4:12; 5:23.

[51]मैक्गार्वे ऐंड पैंडलटन, 433–34.